बच्चन की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

१ धार के इधर-उधर
२ प्रणय पत्रिका
३ सूत की माला
४ खादी के फूल
५ मिलन यामिनी
६ हलाहल
७ बगाल का काल
८. सतरगिनी
९. आकुल अतर
१० एकात सगीत
११ निशा निमंत्रण
१२ मधुकलश
१३ मधुबाला
१४ मधुशाला
१५. खैयाम की मधुशाला [अनुवाद]
१६ प्रारभिक रचनाएँ—पहला भाग } कविताएँ
१७ प्रारभिक रचनाएँ—दूसरा भाग }
१८ प्रारभिक रचनाएँ—तीसरा भाग कहानियाँ
१९. बच्चन के साथ क्षण भर [सचयन]
२० सोपान [सकलन]

'म.........' का अग्रेजी और 'बगाल का काल' का बँगला अनुवाद प्रकाशित हो चुका है।

विलियम शेक्सपियर रचित

मैकबेथ

का

पद्यानुवाद

अनुवादक
बच्चन

राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली-६

श्री जवाहरलाल नेहरू को

आदरणीय,

आपने मुझे जिस प्रकार के कार्य के लिए अपने निकट बुलाया था, अपने कलाकार के मानों मे, उसीका एक परिष्कृत स्वरूप आज आपके सामने रख रहा हूँ। काम के समय अपने पैर ज़मीन पर जमाए हुए भी, अवकाश के समय आकाश मे अपने डैने फैलाने का जो प्रयास मैंने किया है, आशा है, उसे आप थोड़े कौतूहल और बहुत सहानुभूति के साथ देखेंगे।

विदेश मंत्रालय, नई दिल्ली। आपका

१४. ११ ५६ बच्चन

प्रवेशिका

आज हिंदी पाठको के सामने शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक 'मैकवेथ' का पद्यानुवाद उपस्थित करते हुए मैं वडे आनद एव गर्व का अनुभव कर रहा हूँ। वस्तुत हिंदी के लिए शेक्सपियर का यह सर्वप्रथम नाटक है जो पद्यवद्ध रूप में प्रकाश में लाया जा रहा है।

शेक्सपियर के जीवन, काव्य और नाटको के विषय में इतना अधिक लिखा जा चुका है, लिखा जा रहा है और लिखा जा सकता है कि इनके विषय में लेखनी उठानेवाले को अपने ऊपर वडा कडा सयम रखना चाहिए। मैं प्रयत्न करूँगा कि यह प्रवेशिका छोटी से छोटी रक्खी जाय।

शेक्सपियर (१५६४–१६१६) अग्रेजी भाषा के सर्वश्रेष्ठ कवि और नाट्यकार माने जाते हैं। वहुत से विद्वान् उन्हें योरोपीय साहित्य का, और कुछ उन्हे विश्व-साहित्य का महानतम कवि और नाट्यकार समझते हैं। उनपर निर्णय देने का न मैं अधिकारी हूँ और न उसका, यदि मैं ऐसा करने का दु साहस करूँ भी तो, कोई मूल्य होगा। फिर भी जिस रूप में मैंने उन्हें स्वीकार किया है उसे वता देने की धृष्टता मैं करना चाहता हूँ। मैं समझता हूँ कि शेक्सपियर विश्व के लिए पश्चिमी सभ्यता के सवसे सु दर वरदान हैं।

उनकी कृतियों की सख्या लगभग चालीस है—लगभग इसलिए कहा जाता है कि कुछेक रचनाओं के आमूल लेखक होने के सवध में विद्वानो को सदेह है। सभवत उन्होंने उनका सशोधन-सपादन किया था अथवा उनके लेखन में किसी अश तक सहयोग दिया था। इनमें से सैंतीस

नाटक हैं—दुखात, सुखात, ऐतिहासिक, दुखसुखात, और इन सबसे परे भी। शेक्सपियर ने देखा था कि जीवन में दुख-सुख घुले-मिले भी हैं और दोनो के ऊपर भी उठा जा सकता है।

'भिन्न सुखों से, भिन्न दुखों से होता है जीवन का रुख भी।'

जीवन की विविधता, विशालता और विचित्रता ही शेक्सपियर के नाटको के लिए मापदड का काम कर सकती है।

इन सैंतीस नाटको में शीर्षस्थान दिया जाता है उनके चार दुखांत नाटको को, जिनके नाम हैं, 'हैमलेट', 'मैकवेथ', 'ओथेलो' और 'किंग लियर'। किसी न किसी दृष्टि से इनमें से हर एक को सर्वोच्च सिद्ध करने के प्रयत्न समालोचको द्वारा वरावर हुआ करते हैं। मुझे प्रसन्नता है कि अंग्रेजी न जाननेवाले हिंदी पाठको को 'मैकवेथ' का परिचय पद्य-नाटक के रूप में देने का सौभाग्य मुझे प्राप्त हो रहा है।

भारतीयो को शेक्सपियर का परिचय भारत मे अंग्रेज़ी राज्य की स्थापना एव अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के साथ प्राप्त हुआ। भारतीय भाषाओ मे शेक्सपियर के नाटको को अनूदित करने की लालसा स्वाभाविक थी। वगाल सर्वप्रथम अंग्रेजो के अधिकार एवं प्रभाव में आया। वंगाली भाषा में पर्याप्त क्षमता थी। पहले-पहल शेक्सपियर के अनुवाद, जहाँतक मुझे मालूम है, वंगला में ही हुए; वाद को अन्य भाषाओ में।

अंग्रेज़ी का साधारण ज्ञान रखते हुए भी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का ध्यान शेक्सपियर की ओर आकर्षित हुआ था। उन्होने शेक्सपियर के 'मर्चेन्ट आफ वेनिस' का रूपान्तर 'दुर्लभ वंधु' के नाम से किया था। इसके पूर्व वावू वालेश्वर प्रसाद वी०ए० ने इस नाटक की कथा 'वेनिस का सौदागर' के नाम से सम्भवत लैंव-लिखित 'टेल्स फ्राम शेक्सपियर' के आधार पर लिखी थी।

उन्नीसवी शताब्दी के अंतिम दशक में जयपुर के गोपीनाथ पुरोहित ने 'रोमियो ऐंड जूलियट' का अनुवाद 'प्रेम लीला' के नाम से, और वदरीनारायण चौधरी के भाई मथुरा प्रसाद ने 'मैकवेथ' का, 'साहसेंद्र

साहस' तथा 'हैमलेट' का, 'जयत' के नाम से प्रकाशित किया। इन्हें पढने का सौभाग्य मुझे नही मिला। कोई सज्जन इन्हे मेरे लिए सुलभ कर सकें तो कृतज्ञ हूँगा। मेरा अनुमान है इनमें 'दुर्लभ बधु' की परपरा का अनुसरण किया गया होगा।

नाटको के कथा भाग को कहानियो में कहने की परपरा गगाप्रसाद एम० ए० ने आगे बढ़ाई और इस शताब्दी के तीसरे दशक में ये कहानियाँ छः भागो में, इडियन प्रेस, प्रयाग द्वारा प्रकाशित की गई। कुछ मास हुए, मैंने कही विज्ञापन देखा है, किसी महिला ने शेक्सपियर के नाटको की कहानियाँ अभिनव रूप और शैली में उपस्थित की हैं।

इस शताब्दी के तीसरे दशक में ही लाला सीताराम बी० ए० ने शेक्सपियर के कुछ नाटको का अनुवाद—'मैकबेथ' इनमें से एक था—प्रकाशित कराया। उनके अनुवाद गद्य में हैं, जबकि शेक्सपियर ने अपने नाटक पद्य में लिखे थे। इन अनुवादो को मैं छायानुवाद ही कहना चाहूँगा, तो भी शेक्सपियर के नाटको को उनके निकटतम रूप में सर्व-प्रथम हिंदी में उपस्थित करने का श्रेय लालाजी को ही है। भारतेन्दु और उनके अनुयायियो ने नाटको का वातावरण भारतीय कर दिया था।

१९३० के लगभग मैंने शेक्सपियर के 'ओथेलो' का भी एक हिंदी अनुवाद पढ़ा था। अनुवादक का नाम भूल गया हूँ। यह लालाजी-कृत नहीं था। यह भी गद्य में था।

इन पक्तियो के कोई पाठक इस अनुवाद का कोई अता-पता देंगे अथवा इसकी एक प्रति मुझे भिजवा सकेंगे तो बहुत आभारी हूँगा।

हिंदी में शेक्सपियर के नाटको के सबध में यदि और कोई काम हुआ है तो मैं उससे अनभिज्ञ हूँ।*

---

*जब मेरा 'मैकबेथ' का अनुवाद छपने को भेज दिया गया था उस समय मुझे पता लगा कि डा० रागेय राघव ने शेक्सपियर के लगभग एक दर्जन नाटको का अनुवाद गद्य में कर डाला है और वे राजपाल ऐन्ड

शेक्सपियर के नाटको को हिंदी में अनूदित करने की बात मेरे मन में सबसे पहले प्रसिद्ध अभिनेता श्री बलराज साहनी और उनकी पत्नी श्रीमती संतोष साहनी ने डाली थी। उनका विचार था कि मेरी कविताओं में जो सरल, सचित्र, बोलती हुई भाषा है वह नाटक के अनुवाद के लिए बहुत उपयुक्त है। शेक्सपियर के नाटक मैंने काफी पढ़े-पढ़ाये थे, मुझे उनका अनुवाद करना हो तो उनका अभिनय भी मुझे पर्याप्त देखना चाहिए। यह अवसर मुझे इंग्लैंड-प्रवास में प्राप्त हुआ; पर अनुवाद एक पंक्ति का न हुआ। इंग्लैंड से लौटा तो श्रीमती साहनी ने इस विषय में मुझे फिर पत्र लिखे। श्री साहनी मिले तो उन्होंने फिर अनुरोध किया। उधर दिल्ली की साहित्य अकादेमी ने विदेशी साहित्य को हिंदी में अनूदित कराने की अपनी योजना में शेक्सपियर का एक नाटक मेरे नाम लिख दिया। साथ ही भारत सरकार ने जिस विशेष कार्य के लिए मुझे विदेश मंत्रालय में बुलाया था उसमें अधिक दक्षता प्राप्त करने के उद्देश्य से, अभ्यास के तौर पर, मैं किसी अंग्रेजी क्लासिक्स का अनुवाद हिंदी में करना चाहता था।

रुचि ही कुछ ऐसी मिली है कि मन ज़मीन से उठता है तो आसमान पर ही टिकता है। शेक्सपियर की ओर ध्यान गया। विश्व साहित्य में शेक्सपियर का क्या स्थान है, इसे सोचना हम थोड़ी देर के लिए बंद भी कर दें तो, यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि उनकी रचनाएँ अंग्रेजी भाषा और साहित्य की मेरुदंड हैं। उनके साथ खड़े होने का साहस यदि कोई और रचना कर सकती है तो वह है बाइबिल। अंग्रेजी भाषा का कोई लेखक यदि उनसे अप्रभावित है तो उसका कारण केवल एक हो सकता है कि वह उनके प्रादुर्भाव से पूर्व अपनी लेखनी रख चुका

सन्ज, दिल्ली, से प्रकाशित हो रहे हैं। जब मैंने अपना अनुवाद आरंभ किया, मुझे उनके अनुवाद की कोई खबर न थी। शायद यह एक सबूत है कि शेक्सपियर एक बार फिर हिंदी के वातावरण में है।

था। वाइबिल का शुद्ध-सुदर अनुवाद करने के लिए मुझे किसी हिंदी भाषी निष्ठावान ईसाई माँ की कोख से जन्म लेना था। मैंने शेक्सपियर के किसी नाटक से अपना प्रयोग आरभ करने का निश्चय किया।

मैने 'मैकवेथ' को उठाया जो अनुवाद की दृष्टि से मुझे उनका सबसे कठिन नाटक प्रतीत हुआ। इसमे सफल होता हूँ तो सभवत मैं शेक्सपियर के अन्य नाटको का अनुवाद भी कर सकूँगा, असफल होता हूँ तो उनको अनूदित करने की आकाक्षा मुझे सदा के लिए छोड देनी चाहिए। अनुवाद पूरा हुआ, प्रकाशित किया जा रहा है और अब जनता-जनार्दन निर्णय दें कि यह कैसा हुआ है।

जैसा कि मैने पहले कहा है, शेक्सपियर के कुछ नाटकों का अनुवाद हिंदी गद्य में हो चुका है। पर ये नाटक पद्य में लिखे गए थे, और मेरी ऐसी धारणा है कि जबतक उनका अनुवाद पद्य में न किया जाय उनमें रसे-वसे कवित्व की रक्षा नही की जा सकती। हमें यह न भूलना चाहिए कि शेक्सपियर महान नाटककार ही नही, महान कवि भी हैं और उनकी कविता उनके नाटको में विखरी पडी है। जिस कवित्व का शीशमहल उन्होने पद्य की विशाल छाती पर खडा किया है उसे गद्य के शीश पर वरते ही वह गिरकर चकनाचूर हो जाता है। मैंने सकल्प किया कि मैं अपना अनुवाद पद्य में करूँगा।

शेक्सपियर का छद अग्रेजी में 'ब्लैंक वर्स' कहलाता है। उसमें समलय किन्तु अतुकात पक्तियाँ होती हैं, जिन्हे 'आयविक पेंटामीटर' कहते है। अग्रेजी भाषा की अपनी विशेष प्रवृत्ति, स्वराघात-प्रधानता, के कारण इस पक्ति में विविधता की वडी सभावना है। थोडी वहुत स्वतत्रता लेकर इसकी विविधता और वढाई जा सकती है। 'ब्लैंक वर्स' अग्रेजी काव्य का आधारभूत छद है।

अनुवाद प्रारभ करने से पहले मेरे सामने सबसे वडी समस्या यह थी कि 'आयविक पेंटामीटर' के जोड का कौन ऐसा छद है जिसमें वह सारा कुछ उतार देने की क्षमता हो जो शेक्सपियर अपनी पक्तियो में भर देते

हैं। और उनकी शब्द योजना के वाहरी आवरण का ध्यान छोड, भावो में डूब, जब मैंने हिंदी के माध्यम से उसे व्यक्त करना आरंभ किया तो उसने २४ मात्राओ के छंद का आकार लिया, जिसे शायद 'रोला' कहते हैं। अव जब मैंने शेक्सपियर का एक पूरा नाटक रोला छद मे अनूदित कर लिया है तो मुझे यह कहने का साहस होता है कि इस छद में बडी ही सवहन शक्ति है। हिंदी भाषा की अपनी विशेष प्रवृत्ति, मात्रा-प्रधानता, के कारण उसकी पद्य-पंक्तियो में विविधता की सभावनाएँ सीमित हैं और स्वतत्रता तो ली ही नही जा सकती। यदि एक पक्ति में स्वतत्रता ले ली जाय तो ठीक दूसरी पक्ति में उसका परिहार करना पडता है। पर हम भाषा की प्रवृत्ति से नही झगड सकते। सस्कृत मात्रिक है, यूनानी मात्रिक है, और इन दोनो में महान नाटक और काव्य लिखे गए हैं। मात्रिकता की परिसीमाओ के बावजूद हिंदी पद्य-पक्तियो में उच्च एव सूक्ष्म काव्य गुणो को सन्निहित कर सकने की क्षमता है। में यहाँ सबूत देने नही जा रहा हूँ।

किसी भी भाषा के महान काव्य में शब्द और अर्थ, गिरा और अर्थ, जल और वीचि के समान सबद्ध होते हैं। अनुवादक को अर्थ लेना पडता है, शब्द छोडना पडता है, और उस अर्थ को दूसरी भाषा के शब्दो के साथ ज़ोडना पडता है। अपने अभ्यास के दौरान में मैंने देखा कि 'आयंबिक' पेंटामीटर' अपनी एक पक्ति में जितना अर्थ रख देता है उसे उठाने के लिए रोला की सवा या डेढ, और कही-कही दो पक्तियों की आवश्यकता होती है। रोला की ही पक्ति में आठ मात्राएँ और जोडकर यह अतर कम किया जा सकता था, पर मैंने किन्ही कारणो से उसे ठीक नहीं समझा। शेक्सपियर के नाटक खेले जाने के लिए हैं और दर्शक पक्तियाँ नही गिनता।

इसके कई कारण हैं। अर्थ से उतना ही अर्थ नही जितना स्कूली बच्चो को वताया जाता है। मेरे लिए तो उसमें रस भी सम्मिलित है। दूसरे, थोडा लिखना, बहुत समझना—मोर इज़ मेंट दैन मीट्स द इयर

ही हाथो में जा रहा है। इसका अनुवाद करने में मैंने चार विशेष लक्ष्य अपने सामने रक्खे थे—अनुवाद, छायानुवाद न होकर अविकल हो; शेक्सपियर के कवित्व की रक्षा की जाय, नाटक, सामान्य शिक्षित-दीक्षित जनता के सामने खेला जा सके, और चरम लक्ष्य यह हो कि अनुवाद, अनुवाद न मालूम हो।

'मैकबेथ' का अनुवाद जब मैंने आरभ किया था तब मेरे मन में हिचक थी कि उसे पूरा कर भी पाऊँगा कि नहीं और जबतक यह समाप्त नही हो गया तबतक इसका पता सिवा मेरी पत्नी के और किसीको नही था। अनुवाद को पुस्तक रूप में प्रकाशित करने के पूर्व मैं उसे अपने कई मित्रो को दिखाना चाहता था। टाइप की हुई प्रतियाँ कम, मित्र अधिक, फिर कोई देश के इस कोने में, कोई उस कोने में। केवल श्री सुमित्रानन्दन पन्त और श्री बलराज साहनी के सुझाव मुझे मिल सके जिनसे कवित्व एव अभिनय की दृष्टि से इसे सुधारने में मुझे काफी सहायता मिली। पन्त जी ने अपना विशेष समय और श्रम लगाया। खेद यही था कि उनके प्रयाग और मेरे दिल्ली रहने के कारण हम साथ बैठ-कर इसपर काम न कर सके। मैं इन दोनों मित्रों के प्रति अपना आभार प्रकट करना चाहता हूँ।

अनुवाद जिस रूप में प्रकाशित किया जा रहा है उसे मैं इसका अतिम रूप नही मानता। होना तो यह चाहिए था कि पहले इसका कई बार नाटक-पाठ होता, फिर इसका कई बार अभिनय होता और इस प्रकार यह अनुवाद जो रूप लेता वह प्रकाशित किया जाता। मेरी यह निश्चित धारणा है कि शेक्सपियर के नाटक भी जिस रूप में लिखे गए थे उसी रूप में प्रकाशित नही किए गए। उन दिनो प्रथा ही यह थी कि नाटक लिखे जाने के बाद पहले वर्षो हस्तलिखित प्रतियो से उनका अभिनय किया जाता था और तब कही जाकर वे पुस्तक रूप में छपते थे। और अभिनय करते-करते नाटकों का रूप बहुत बदल जाता था, बहुत निखर आता था। शेक्सपियर के किसी नाटक की प्रति ऐसी नही प्राप्त

हुई जो उनके हाथ की लिखी हो। 'मैकबेथ' को ही लीजिए। यह सर्व-प्रथम १६०६ में खेला गया था; १६१६ में शेक्सपियर की मृत्यु हुई और उसके सात वर्ष बाद, यानी १६२३ में, यह प्रथम बार मुद्रित हुआ। यदि मौलिक नाटकों के लिए यह आवश्यक है कि उनका अंतिम रूप अभिनेता
ग निर्धारित हो तो अनुवाद के लिए तो यह और भी
ी इसे प्रकाशित करने की आवश्यकता इस कारण
ा और रग-मच की आलोचना के पूर्व, अनुवाद
र सु दरता की दृष्टि से, परिष्कृत एव परिमार्जित
हुत से लोगो की आलोचना की आवश्यकता है जो
ानो के ज्ञाता हो। साथ ही छपी प्रतियो से नाटक-पाठ और अभिनय दोनों सुलभ होंगे। इस कार्य में जिन लोगो की रुचि हो, इस प्रवेशिका के द्वारा, मैं उन सबो को निमन्त्रित करता हूँ कि वे मेरे अनुवाद को निष्पक्षता से पढें, खटकनेवाली बातो की ओर मेरा ध्यान आकर्पित करें, इसकी त्रुटियाँ बतलाएँ और हो सके तो सुधार सुझाएँ। उनके सहयोग से, मुझे विश्वास है, मेरे अनुवाद के बहुत से दोषो का निराकरण हो जायगा। शेक्सपियर ऐसे महाप्रतिभ की रचना को हिंदी में रूपांतरित करने के लिए मैं केवल अपनी अल्प बुद्धि एव रुचि को नितात अपर्याप्त स्वीकार करता हूँ।

मेरे जिन मित्रो ने पाडुलिपियो मे 'मैकबेथ' का अनुवाद पढा और पसद किया और मुझसे शेक्सपियर के और नाटको का अनुवाद करने के लिए अनुरोध किया उन्हे मैं एक शुभ सूचना देना चाहता हूँ कि मैंने उनके प्रोत्साहन पर 'ओथेलो' का अनुवाद आरभ कर दिया है।

अंत में मैं उन सब लोगों को धन्यवाद देना चाहता हूँ जिन्होने किसी भी रूप में इस कार्य के सपादन में मेरी सहायता की।

विदेश मन्त्रालय,
नई दिल्ली।
२८-५-५७

—बच्चन

नाटक के पात्र

डकन	स्काटलैंड का राजा
मैलकम डोनलबेन	डकन के बेटे
मैकबेथ बैंको	डकन के सेनापति
मैकडफ लेनाक्स रास मेनटेथ ऐंगस कैटनेस	स्काटलैंड के सरदार
फिलएस	बैंको का बेटा
पिता सिवर्ड	नार्दंबरलैंड का सरदार, अंग्रेजी फौज का सेनापति
पुत्र सिवर्ड	सिवर्ड का बेटा
सेटन	मैकबेथ की सेवा में रहनेवाला एक अफसर
छोटा लड़का	मैकडफ का बेटा
एक अंग्रेज डाक्टर	
एक स्काच डाक्टर	
एक सारजेंट	
एक द्वारपाल	
एक बूढ़ा आदमी	
लेडी मैकबेथ	
लेडी मैकडफ	
परिचारिका	लेडी मैकबेथ की सेवा में रहनेवाली
मसानी देवी और तीन डाइनें	

सरदार, नागरिक, अफसर, सैनिक, हत्यारे, सेवक और दूत
बैंको का प्रेत और दूसरी छायाएँ।

स्थान : चौथे अंक के अंत में, इंग्लैंड, शेष नाटक में स्काटलैंड।

पहला अंक

पहला दृश्य

खुली जगह

(बादल गरज रहा है, बिजली चमक रही है ·
तीन डाइनें आती हैं।)

पहली डाइन : कब जुटती फिर तीनों हम—
आँधी में, या पानी मे, या
बिजली चमके जब चम-चम ?

दूसरी डाइन : हल्ला-गुल्ला जब हो बंद,
शोर-शड़प्पा हारे-जीते
रण का जब पड़ जाए मंद।

तीसरी डाइन : खत्म लड़ाई होगी त्योंही,
ज्योंही होगा दिन का अंत।

पहली डाइन . जगह बताओ।

दूसरी डाइन : अरे वही जो
पच्छिम-पूरब का ऊसर।

तीसरी डाइन · वही मिलेगा मैकबेथ हमको,
ऐसा शूर नही भू पर।

(नेपथ्य में बिल्ली की आवाज)

पहली डाइन : बिल्लो मुझे बुलाती,—आई !

(नेपथ्य में मेढक की आवाज)

सब डाइनें : मेढक ने भी टेर लगाई ।
बुरा वही है, जो अच्छा है,
जो अच्छा है, वही बुरा .
चक्कर मारो, उडो हवा मे
हो बदबू, या हो कुहरा ।

[सब बाहर जाती हैं

दूसरा दृश्य

फारेस के निकट का डेरा

(नेपथ्य में युद्ध का बाजा बजता है। एक ओर से महाराज डकन, मैलकम, डोनलबेन, लेनाक्स और नौकर-चाकर आते हैं, दूसरी ओर से एक घायल सारजेंट आता है।)

डंकन यह घायल आदमी कौन है ? इसकी हालत से लगता है, हमे युद्ध की ताजी खबरे दे सकता है ।

मैलकम : श्रीमन्, यह है सारजेंट जो
अच्छे-सधे सिपाही-सा लडता दुश्मन के
हाथो में पड़ने से मुझे बचा लाया था ।
मेरे वीर मित्र, बतलाओ महाराज को,
रण की हालत क्या थी, जब तुम चले वहाँ से ।

सारजेंट . श्रीमन्, दुबधे की हालत थी, ऐसी, जैसे

दो तैराक, थके, आपस मे गुथे हुए हों,
एक दूसरे के कर-बस को कुंठित करते।
निर्दय मैकडनवाल्ड (बागियो मे बढ़-चढ़कर,
जिसमे दुनिया के सब दुर्गुण कूट-कूटकर
भरे हुए हैं) लाया है पच्छिमी द्वीप से
घुड़सवार, पैदल सिपाहियो का दल रण में;
उनका कौशल देख लगा पल भर को जैसे
जीत उसीकी किस्मत मे है : लेकिन किसका
भाग्य रहा थिर ? आखिर को कमज़ोर पड़े वे,
महाबली मैकबेथ—उसका यह उचित विशेषण—
ले नंगी तलवार, शत्रुदल के शोणित की
प्यास मचलती थी जिसकी जिह्वा मे, करता
हुआ अवज्ञा भावी की आगे बढ़ आया,
खड़ा हो गया नर पिशाच के सम्मुख ऐसे,
जैसे उसका बनकर काल कराल खडा हो;
उसे न आगे बढने दिया, न पीछे हटने
और अचानक सीना उसका चाक कर दिया,
नाभी से ले हलक तलक, बस एक वार मे,
शीश काटकर टाँग दिया खेमो के आगे।

डंकन　　धन्य बंधु तुम ! धन्य तुम्हारा है बल-विक्रम।

सारजेंट　　: किंतु जहाँ से रवि छिटकाता छवि की किरणें,
ठीक वही से उठते है तूफान भयंकर
जिनमे पड़कर नौकाएँ डूबा करती है।
जिस निर्झर से शांति उतरती जान पड़ी थी

उससे ही सहसा अशांति की बाढ आ गई।
स्काटलैंड के नाथ, देखिए क्या होता है .
ज्योही बल ने धारण कर तलवार न्याय की
समर-भूमि से दुश्मन-दल के पांव उखाडे,
त्योही, मौका देख, नारवे के राजा ने
नए अस्त्र-शस्त्रो से सज्जित नई फौज ले
हम पर धावा बोल दिया फिर।

डंकन . डरे नही इस
घटना से मेरे सेनापति—मैकवेथ, बैंको ?

सारजेंट . गौरैयो से गरुड, स्यार से सिंह डरेगा!
अगर कहूँ सच, कहना होगा, वे थे ऐसी
तोपो से जिनमे दुगनी बारूद भरी हो,
उन दोनो ने
लौटाया हर वार शत्रु का दूना और
चौगुना करके यह लगता था, वे दुश्मन को
उसके घावो के लोहू मे बिना डबोए
नही रहेगे, या समरागण को कर देंगे
मरघट, जैसा था गलगोथा[1] किसी समय मे!
और नही बोला जाता है —
सिर चकराता है, मेरे घावो की मरहम-
पट्टी जल्दी करने की आवश्यकता है।

डंकन तुझे सोहते हैं ये तेरे शब्द, घाव भी,

१ वह स्थान, जहाँ ईसामसीह को सलीब पर लटकाया गया था, कहा जाता है यह नरमुंडो से पटा था।

गौरव टपक रहा दोनो से—लो इसको
सरजन को दिखलाश्रो।

[नौकर सारजेंट को बाहर ले जाते हैं

(रास श्राता है)

कौन चला जाता है ?

मैलकम : महाराज, यह रास प्रांत के योग्य राव है।

लेनाक्स : श्राँखो मे कितनी घबराहट भरी हुई है !
लगता है, कुछ नई खबर लेकर श्राए है।

रास : महाराज की जय हो !

डंकन : राव, कहाँ से श्राए ?

रास : महाराज, फाइफ से, जहाँ नारवी झडे
श्रासमान मे पखे-से लहरा-लहराकर
थके हमारे दल को ठडक पहुँचाते है।
राव कावडर का जो है विश्वास-विघाती,
राजद्रोही, उसकी पाकर मदद नारवे
के राजा ने श्रपनी भारी सेना लेकर
घमासान सग्राम श्रचानक छेड दिया था :
पर मैकबेथ, बख्तर से सज्जित श्रौर सुरक्षित
बढा सामना करने को ऐसे, जैसे वह
साक्षात हो रण चंडी का पति पराक्रमी,
हुश्रा जोड़ का युद्ध, पैतरे चले बराबर,
हुए वार पर वार, तोड़ दी, पर, मैकबेथ ने
बढ़ी हुई सब हिम्मत उसकी, श्रौर श्रंत मे
विजय हमारी हुई, —

डंकन बड़ा आनन्द हुआ यह !

रास और नारवे का राजा, स्वेनो, अब करता
संधि-प्रार्थना, किंतु उसे हम तबतक अपने
मरे सिपाही नहीं गाड़ने देंगे, जबतक
दस हजार डालर वह हमको हरजाने मे
नहीं चुकाता सेंट कालमे के टापू पर।

डंकन : मेरी इच्छा के विरुद्ध कावडर-प्रांतपति
फिर न चलेगा, फिर न करेगा धोखेबाजी।—
अभी उसे जाकर फाँसी की सजा सुनाओ,
उसके पद पर विजयी मैकबेथ को बिठलाओ।

रास होगा, जैसा महाराज ने हुक्म सुनाया।

[बाहर जाता है

डंकन उसने जो खोया, नरवर मैकबेथ ने पाया।

[सब बाहर जाते है

तीसरा दृश्य

ऊसर

(तीन डाइनें आती है।)

पहली डाइन वहिन, कहाँ थी ?

दूसरी डाइन सुअर मारती।

तीसरी डाइन वहिन, कहाँ तू ?

पहली डाइन : कोछ भरे अखरोट एक माँझी की पत्नी
चला रही थी लगातार अपना मुँह मैंने

कहा, 'मुझे दे' :—पर वह जूठनखानी, कोढ़िन
झिड़की देकर कहती है, 'हट दूर यहाँ से !'
उसका पति 'टइगर'[1] जहाज़ से गया अलप्पो :
पर मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी
छेद-भरी चलनी मे तिरती,
बेदुम के चूहे-सी फिरती,
पहुँचूंगी, पहूँचूंगी, निश्चय ।

दूसरी डाइन : एक हवा का झोंका तुझको मै देती हूँ ।

पहली डाइन : बड़ी कृपा है ।

तीसरी डाइन · और दूसरा मै देती हूँ ।

पहली डाइन : और चाहिए जो कुछ सब है मेरे पास;
बदरगाह उड़ा देगे ये झझावात :
जितने भी है दिए दिशाओ के सकेत
माँझी के नक्शे पर, सब है इनको ज्ञात ।
उसे सुखाऊँगी मै जैसे सूखी घास .
नीद नही फटकेगी, दिन हो, चाहे रात,
उसके ढेलो को ढकती पलको के पास,
इतना भारी होगा उसके सिर पर शाप,
नौ नौ गुन की सात गुनी कर जितनी रात,
घुल-घुल हड्डी-हड्डी होगा भरता आह :
जल मे उसका पोत नही पाएगा डूब,
पर खाएगा झंझा के झकझोरे खूब ।
देख जरा, क्या मेरे पास ।

---

१. टइगर—चीता, यहाँ जहाज़ का नाम ।

दूसरी डाइन . दिखला, दिखला ।

पहली डाइन . माँझी का मैं एक अँगूठा लाई तोड़,
बढा चला आता था जब वह घर की ओर ।

(नेपथ्य में ढोल की आवाज)

तीसरी डाइन . ढोल ढमाढम, ढमढम, शोर !
मैकबेथ आता है इस ओर ।

सब डाइनें . डाइन—डाइन पकड़ें हाथ,
जल मे, थल मे, नभ-मडल मे
विचरण करने वाली साथ,
फिर-फिर घूमे गोलाकार :
तेरे तीन, तीन अब मेरे,
तीन हुए फिर, सब नौ फेरे ।
बस !—अब जादू है तैयार ।

(मैकबेथ और बैंको आते हैं ।)

मैकबेथ इतना अच्छा और बुरा दिन कभी न देखा ।

बैंको . फारेस कितनी दूर यहाँ से ?—कौन खड़ी ये ?—
इनके सूखे वदन, अनूठे वसन देखकर
लगता है ये नही भूमि पर बसनेवाली,
फिर भी ये धरती पर । (डाइनो से)
क्या तुम जीवनधारी ?
हम कुछ प्रश्न करें तो क्या तुम उत्तर दोगी ?
तुम सब झुर्रीदार उगलियाँ अपने चिमड़े
होठो पर रखती हो, इससे लगता मेरी
बात समझती हो निश्चय ही नारी हो तुम,

फिर भी देख तुम्हारी दाढ़ी, ऐसा कहने
मे संकोच मुझे होता है ।

मैकबेथ : बोल सको तो बोलो, क्या हो ?

पहली डाइन : सबका अभिवादन मैकबेथ को ! अभिवादन
तुझको ग्लेमिस के राव !

दूसरी डाइन : सबका अभिवादन मंकबेथ को ! अभिवादन है
तुझे, कावडर-नाथ !

तीसरी डाइन . सबका अभिवादन मैकबेथ को ! आगे चलकर
जिसे मिलेगा राज !

बैंको . श्रीमन्, चौंक उठे क्यो, इन बातो से डरते
जो सुनने मे इतनी मीठी ? (डाइनो से)
सच-सच बोलो,
तुम छलना हो, या कि ठीक जैसी बाहर से
दीख रही हो ? मेरे भाग्यवान साथी का
तुम अभिवादन करती उसके वर्तमान पद,
आगामी सपद, भविष्य मे राजभोग की
आशा से भी, जिसके कारण वह अपने मे
खोया-सा है : मुझसे तुम क्यो नही बोलती ?
अगर काल के अंतराल मे पैठ तुम्हारी,
और जान सकती हो दाना कौन उगेगा,
कौन सूख जाएगा, तो कुछ मुझे बताओ,
गो तुम करके कृपा बना दोगी क्या मेरा,
और घृणा करके बिगाड़ ही क्या पाओगी ।

पहली डाइन : अभिवादन !

दूसरी डाइन　अभिवादन !

तीसरी डाइन　अभिवादन !

पहली डाइन　घटकर मैकबेथ से औ' उससे बढ़कर भी ।

दूसरी डाइन . इतना सुखी नही, पर उससे अधिक सुखी ।

तीसरी डाइन　तू न करे, पर राज करेंगे तेरे वशज ही
　सबका अभिवादन मैकबेथ औ' बैंको, दोनो को !

पहली डाइन　मैकबेथ औ' बैंको, दोनो को सबका अभिवादन !

[डाइनें जाने लगती हैं

मैकबेथ　. ठहरो, ओ अटपट वक्ताओ, और बताओ ।
　सैनेल[1] के मरने से ग्लेमिस-राव बना मैं,
　किंतु कावडर-पति मै कैसे ? राव वहाँ का
　जीवित, जाग्रत, औ' राजा होना आशा की
　हद से इतना बाहर जितना राव कावडर
　का बन जाना । बतलाओ तो तुम्हे कहाँ से,
　कैसे अद्भुत ज्ञान हुआ यह ? क्यो इस उजडे
　ऊसर मे तुम राह रोककर यह भविष्य वाणी
　करती हो ?—सुनती हो, मै क्या कहता हूँ ?

[डाइनें गायब हो जाती हैं

बैंको　. मिट्टी मे बुल्ले उठते जैसे पानी मे,
　ऐसी थी ये—कहाँ हो गई तीनो गायब ?

मैकबेथ　अंतरिक्ष मे, जो सदेह लगती थी घुलकर
　साँस की तरह हवा मे मिली—यदि वे रुकती !

बैंको　हम जिनकी बाते करते है, क्या सचमुच थी,

---

१ मैकबेथ का पिता ।

या हम कोई जड़ी, नशीली, खा बैठे है,
जिससे तर्क-बुद्धि कुंठित हो जाया करती ?

मैकवेथ : पुत्र तुम्हारे राजा होगे।

वैको : पहले तो तुम।

मैकवेथ . राव कावडर का भी, कहा न था ऐसा ही ?

वैको : ठीक इसी लब-लहजे में। यह कौन आ गया ?

(रास और ऐंगस आते हैं।)

रास . जीत की खबर पाकर, मैकवेथ, महाराज को
वड़ी खुशी है, जब वे सुनते है इस रण मे
तुमने कितना अद्भुत पौरुष स्वयं दिखाया,
तब वे समझ नही पाते है इसपर अपना
अचरज प्रकट करे, या सुयश तुम्हारा गाएँ।
इस दुविधा मे, उस दिन के युद्धस्थल की जब
मौन कल्पना वे करते, तब तुम्हे देखते
विकट नारवी सेना-दल मे डटे अकपित
पल-पल रचते महामरण के रूप भयकर।
तरपर जैसे ओले गिरते, खबरे आई,
महाराज तक पहुँची; सब मे मातृभूमि की
रक्षा मे जो तत्परता तुमने दिखलाई
उसकी वड़ी वड़ाई की थी।

ऐंगस : हम आए है
महाराज का धन्यवाद तुम तक पहुँचाने,
केवल उनके आगे तुम्हे लिवा चलने को,
नही इनाम तुम्हे देने को।

रास कोई बडा मान तुमको मिलनेवाला है,
उसकी तैयारी मे समझो, मुझे उन्होने
आज्ञा दी है, तुमको राव कावडर का मै
घोषित कर दूँ ग्रहण करो अपने इस पद को,
तुम इसके सर्वथा योग्य हो, तुम्हे बधाई ।

बैंको (अपने आप)
क्या जो कहा पिशाचिनियो ने सच ही होगा ?

मैकबेथ राव कावडर का जीवित है उसका जामा
क्यो तुम मुझको पहनाते हो ?

ऐंगस . राव कावडर
का अब भी जीवित है,लेकिन न्याय-खड्ग उसकी
गर्दन पर लटक रहा है, जो कि गिरेगा
उसपर निश्चय । मुझे नही मालूम, नारवे .
के राजा का उसने साथ दिया, या अपनी
सेनाओ से छिपे-छिपे विद्रोही दल को
सहायता दी, या दोनो बाते की, कुछ हो,
देश का अहित करने मे वह लगा हुआ था ।
राजद्रोह का अपराधी वह सिद्ध हो चुका,
उसने स्वय कबूल किया है औ' अब उसका
अत निकट है ।

मैकबेथ (अपने आप) ग्लेमिस, और कावडर-पति मै
सबसे बडा मान आगे है । (रास-ऐंगस से)
कष्ट के लिए
आभारी हूँ । (बैंको से)—
क्या अब तुम्हे नही आशा है,

पुत्र तुम्हारे राज करेगे क्योकि, जिन्होने
मुझको दिया कावडर का पद, उनको राजा
बनवाने का वचन दिया है ?

बैंको · 　　　　उनके ऊपर
यदि इतना विश्वास तुम्हे तो, राव कावडर
का होना क्या, राज-ताज के लिए तुम्हारी
साध बढ़ेगी । बडी अनोखी बात हुई यह .
अधकार की ये प्रतिमाएँ, अक्सर हमे हानि
पहुँचाने की मशा से, छोटी बातों
मे सच कहकर, मन को मोहित कर लेती है,
पर मतलब के बडे काम मे धोखा देती ।
(रास-ऐंगस से)—
एक बात, बधुओ । (उन्हे एक तरफ ले जाता है ।)

मैकबेथ · (अपने आप) सत्य दो कहे गए जो,
वे मानो मगलाचरण है राज-भोग के
महाकाव्य के । (रास-ऐंगस से)—
　　　　धन्यवाद है तुम्हे, सज्जनो ।
(फिर अपने आप)—
पराप्रकृति का यह उद्बोधन बुरा नही हो
सकता, और नही अच्छा भी—अगर बुरा है,
क्यो आरंभ सत्य से करके इसने मुझे
सफलता का विश्वास दिलाया ? अब मै राव
कावडर का हूँ : यदि अच्छा है, तो क्यो झुकता
उस विचार की ओर कि जिसके विकट रूप से
तन के रोम खड़े होते है, औ' दृढ़ छाती,

पसली की हड्डियाँ हिलाती धडक रही है,
जैसा कभी नही होता था ? सम्मुख आए
भय से उसकी मन कल्पना भीषण होती ।
हत्या का विचार, जो अबतक सिर्फ स्वप्न ही
मेरे मन का, मुझको कपित कर ऐसा
जर्जरित बनाता, जैसे मेरी कार्यशक्ति सब
मसूवे-मसूबे मे ही खर्च हो गई,
और शून्य के सिवा मुझे कुछ नही सूझता ।

बैंको (रास-ऐंगस से) मेरा साथी कैसा अपने मे खोया है !

मैकबेथ (अपने आप) अगर भाग्य को मुझे बनाना होगा राजा,
भाग्य शीश पर मेरे लाकर ताज धरेगा,
इसकी खातिर मै न उठाऊँ उँगली तो भी ।

बैंको (रास-ऐंगस से) उसे नया पद नए सिले जामे-सा कसता,
कुछ दिन पहने जाने पर वह ठीक लगेगा ।

मैकबेथ (अपने आप) होनी हो सो हो, चिंता से क्या पाना है,
कठिन से कठिन घडियो को भी कट जाना है ।

बैंको नरवर मैकवेथ, हमे तुम्हारा इतजार है ।

मैकबेथ क्षमा करो मुझको . मेरी धुँधली सुधि मे कुछ
भूली बाते उभर उठी थी । (रास-ऐंगस से)—
सदय सज्जनो,
मेरी खातिर जो तुमने यह कष्ट उठाया,
वह मेरे मानस-पट के ऊपर अकित है,
जिसे खोलकर हर दिन उसका मनन करूँगा ।
महाराज के पास चले अब । (बैंको से)—ज़रा सोचना

उसपर जो कुछ आज हुआ है, वक्त मिले तो
उसे तोलना, हम फुरसत से इसपर खुलकर
बात करेंगे।

बैंको : बडी खुशी से।

मैकवेथ : इतना काफी
है तब तक को।—(रास-ऐंगस से)—आओ, मित्रो।

[सब बाहर जाते हैं

चौथा दृश्य

फ़ारेस—महल का कमरा

(तुरही बजती है। महाराज डकन, मैलकम, डोनलबेन,
लेनाक्स और नौकर-चाकर आते हैं।)

डकन : प्राण-दंड मिल चुका कावडर को ? क्या हाकिम
नही अभी तक वापस आए ?

मैलकम : श्रीमन्, वे तो
अभी नही वापस आए है, लेकिन मुझसे
एक मिला जिसने उसको मरते देखा था :
वह कहता था, उसने बडे खुले शब्दो मे
राजद्रोह का अपने को अपराधी माना,
महाराज के क्षमादान की भिक्षा माँगी,
औ' फिर पश्चात्ताप किया वाणी से, मन से।
उसने जितनी खूबी से अपना तन छोडा,
उतनी खूबी से उसने कुछ नही किया था :

उसने त्यागी देह, मरण का जैसे उसने
सबक सीख रक्खा हो, त्यागे प्राण परम प्रिय,
जैसे कोई घर का कूड़ा फेंक रहा हो।

डंकन · कोई विद्या नही कि जिससे कोई जाने
मुँह से मन की वह ऐसा सज्जन था जिसपर
मुझे पूर्ण विश्वास कभी था।

(मैकबेथ, बैंको, रास और ऐंगस आते हैं।)

नरवर भाई !
मैं तो अब भी कृतघ्नता के पाप भार से
दबा हुआ हूँ। बढे हुए एहसान तुम्हारे
इतने आगे, पुरस्कार मेरे कितना ही
पर मारें, उनके पीछे ही रह जाते है
काश तुम्हारी नेकी कम होती, जिससे मैं
धन्यवाद-प्रतिदान बराबर का दे पाता !
मेरे पास यही कहने को बचा हुआ है,
तुम उससे भी ज्यादा पाने के अधिकारी,
जितना दे सकने की कुल सामर्थ्य हमारी।

मैकबेथ मेरी सेवा-भक्ति राजऋण, जिसे समर्पित
करना, केवल उसे चुकाना। राजमान्य का
काम, हमारी सेवाएँ लें, और हमारा
काम, आपके सिहासन, शासन-सपद को,
सताना को, सामतो को अपनी सेवा
अर्पित करना, जिसके द्वारा हम अपना
कर्त्तव्य निभाते, औ' हम जो कुछ भी करते है,

एक आपके प्रति आदर के, और प्रेम के
शुद्ध भाव से ।

डंकन : बारबार तुम्हारा स्वागत :
मैने बेलि तुम्हारी उन्नति की बो दी है,
यत्न करूँगा जिससे पूरी तरह बढे वह ।—
और, बहादुर बैंको, तुमने किया नही कम,
काम तुम्हारा नही किसीसे छिपा हुआ है,
आओ, तुमसे गले मिलूँ मैं और हृदय से
तुम्हे लगाऊँ ।

बैंको : अगर वहाँपर मै बढता हूँ
तो फल पर अधिकार आपका ।

डकन : मेरे मन का
हर्ष-सिंधु वढ़ और उमँडकर अश्रु बिंदुओं
मे छिप जाने को आतुर है ।—मेरे पुत्रो,
बंधु-बाधवो, सामतो, औ' निकटवर्तियो,
तुम्हे विदित हो, हम अपना युवराज बनाते
है मैलकम को, जो कि हमारा ज्येष्ठ पुत्र है;
कंबरलैंड-कुमार आज मैं उसे बनाता :
औ' उसके सम्मानित होने के अवसर पर
चिन्ह श्रेष्ठता के, जैसे तमगे, चमकेंगे
उन सबपर जो अधिकारी हैं ।—चलो यहाँसे
सब इनवरनेस, और करो मुझको आभारी ।

मैकबेथ . जो सेवाएँ नही आपको अर्पित होती,
केवल श्रम है . पूर्व आपके पहुँच, आपके

आने का शुभ समाचार मैं खुद पत्नी को
दूँगा, जिससे वह खुश होगी, इस कारण मैं
विनम्रता से विदा मांगता ।

डकन : योग्य कावडर !

मैकबेथ (अलग) कम्बरलैंड-कुमार !—एक दीवार मार्ग मे,
जिसे फाँदकर अगर नही मैं निकल गया तो
उससे टक्कर खाकर नीचे गिर जाऊँगा ।
तारो, अपनी आग छिपा लो, जिससे मेरी
काली, गहरी मशाओ को ज्योति न देखे,
आँख न झपके हाथ देख, होने दो फिर भी
हो जाने पर जिसे देखकर आँख सहमती ।

[बाहर जाता है

(इस बीच बैंको तथा अन्य सरदार मैकबेथ की वीरता की चर्चा करते रहते हैं ।)

डंकन . सच है, सज्जन बैंको : मैकबेथ बडा बली है,
उसके यश की चर्चा मुझको बहुत सुहाती,
वह मुझको, सगीत जिस तरह । हम भी पीछे
चलें, वह गया आगे-आगे, वहाँ हमारे
स्वागत की तैयारी करने ऐसा मेरा
नही दूसरा सबधी है ।

[तुरही बजती है, सब जाते हैं

पाँचवाँ दृश्य

इनवरनेस—मैकबेथ के गढ़ का कमरा

(लेडी मैकबेथ पत्र पढ़ती हुई आती है।)

लेडी मैकबेथ : "वे मुझे विजय के दिन मिली, और मुझे इसका पक्का सबूत मिल चुका है कि उनका ज्ञान अलौकिक है। जब मै उनसे कुछ और पूछने के लिए तड़प रहा था, वे हवा बनकर गायब हो गई। मैं अभी अचभे मे खड़ा ही था कि महाराज के दूत आए, और उन्होने 'कावडर का राव' कहकर मेरा अभिवादन किया; इसी पद से वे भूत-भगिनियाँ कुछ देर पहले मेरा स्वागत कर चुकी थी, मेरा भविष्य उन्होंने इस तरह बताया, 'आगे चलकर जो पाएगा राज !' मेरे सौभाग्य की परम प्रिय सहगामिनी, मैने उचित समझा कि तुम्हे यह समाचार दे दूँ, जिससे तुम्हारे भाग्य में जो ऐश्वर्य लिखा है उससे अनभिज्ञ रहकर तुम उस आनंद से वंचित न रहो जो तुम्हारा है। इसे अपने मन मे ही रखना; शेष मिलने पर।"

ग्लेमिस का तू राव, कावडर का भी; वह भी
तू पाएगा जो कि बताया तुझे गया है।—
फिर भी मुझको आशंका तेरे स्वभाव से,
जहाँ दूध की धवल धार-सी मानव-करुणा

उमँडा करती, जो कि निकटतम राह पकडने
तुझे न देगी । तुझमे चाह बडे बनने की,
और हवस की कमी नही है, किंतु कमी है
इन बातो के लिए ज़रूरी खोटेपन की .
तुझे चाह ऊँचे उठने की, पर ईमान
समूचा रखकर , हक से बाहर हाथ बढाना
तू चाहेगा, लेकिन छल से अलग रहेगा,
ग्लेमिस राव, जिसे तू पाना चाह रहा है,
वह पुकारकर यह कहता है, 'ऐसे तुझको
करना होगा, तब जाकर वह तुझे मिलेगा,'
औ' ऐसा करने से तू बस डर से दबता,
गो ऐसा करने की तेरे मन मे उठती ।
जल्दी आ, जिससे तेरे कानो मे अपनी
रूह फूँक दूँ, औ' अपनी वाणी के बल से
सब बाधाएँ दूर भगा दूँ जो तेरे औ'
राज-ताज के बीच खड़ी है, जिससे तेरा
शीश अलकृत करना निश्चित किया नियति ने,
पराप्रकृति ने ।—

(दूत आता है)

तुम क्या समाचार लाए हो ?

दूत : महाराज आनेवाले हैं यहाँ शाम तक ।

लेडी मैकबेथ : तू पागल तो नही हुआ है । तेरे मालिक
उनके साथ नही हैं ? (अपने आप) होते तो तैयारी
करने को सूचित कर देते ।

दूत :　　　　　　　　　　　सुनकर खुश हो :
महाराज के साथ हमारे मालिक भी है,
एक हमारा साथी उनसे आगे निकला,
और हाँफता-गिरता वह मुश्किल से अपना
सदेशा भर कहने पाया ।

लेडी मैकबेथ :　　　　　　　　　　जाओ उसको
देखो-भालो : उसने बड़ी खबर लाकर दी ।

[दूत जाता है

(नेपथ्य में कौए की भर्राई हुई आवाज़)

कौआ भी अपने भर्राए स्वर से कहता,
मेरे परकोटे मे पग धरना डंकन को
घातक होगा । आओ, हे मारक मसूबो
पर मँडलानेवाली रूहो, मेरी सारी
नारि-जनित कोमलता हर लो, भर दो मुझमें
एडी से लेकर चोटी तक, खूब लबालब,
कठिन क्रूरता ! मेरा रक्त बना दो गाढ़ा,
अवरोधो सब मार्ग और सब द्वार दया के,
जिससे जीवन की कोई भी करुण भावना
पैठ हृदय में मेरे निर्मम, दृढ़ निश्चय को
डिगा न पाए, औ' न इरादे और नतीजे
मे खाई बनकर आ जाए ! ओ हत्या के
प्रेरक प्रेतो, जहाँ कही भी हो तुम अपने
अलख रूप मे, प्रकृति-पाप कर्मों के ऊपर
ताक लगाए, तुम आ जाओ मेरी नारी

की छाती में दूध सोख लो, कालकूट दो।
घनी रात, आ, कज्जल-काले, नरक धुएँ से
अपने सब अगो को ढक ले, जिससे मेरी
तेज़ छुरी जो घाव करे वह देख न पाए,
और स्वर्ग तम की चादर को उठा न झाँके
और पुकारे, 'ठहरो', 'ठहरो !'—

(मैकवेथ आता है।)

ग्लेमिस के पति !
राव कावडर के ! भविष्य में दोनो से बढकर
जैसा सकेत हुआ है। तेरे पत्रो
ने अजान इस वर्तमान से मुझको ऊपर
उठा दिया है, और अभी ही मै भावी को
देख रही हूँ।

मैकवेथ : मेरी प्यारी, सुनो, शाम तक
आज यहाँ डकन आएगा।

लेडी मैकवेथ और यहाँ से
कब जाएगा ?

मैकवेथ कल, जैसा उसने कह रक्खा।

लेडी मैकवेथ वह कल कभी नही आएगा ! राव, तुम्हारा
चेहरा पुस्तक-सा है जिसमे जो कुछ मन मे
छिपा हुआ, सब पढ सकते है। अवसर को
धोखा देने को अवसर के अनुरूप बनो तुम,
स्वागत की मुद्रा दिखलाओ आँख, हाथ से,
और बात से : दिखलाई दो सरल फूल से,

रहो आड़ मे कुटिल साँप से । जो आता है
उसकी मेहमानी करनी है; आज रात का
बड़ा काम जो, मेरे ज़िम्मे छोडो उसको,
जो कि हमारी आनेवाली सब रातो को,
सभी दिनो को एकछत्र सत्ता औ' प्रभुता
दे जाएगा ।

मैकबेथ हम इसपर फिर बात करेंगे ।

लेडी मैकबेथ . चेहरे का रँग बदल करोगे ज़ाहिर डर तुम,
फ़िक्र तुम्हे क्या ? सीधी रक्खो सिर्फ नज़र तुम ।
बाकी बात सँभालूँगी मै ।

[दोनो बाहर जाते हैं ।

छठा दृश्य

वही । गढ के सामने

(बाजा बजता है : मशालो की रोशनी होती है । महाराज डकन, मैलकम, डोनलबेन, बैंको, लेनाक्स, मैकडफ, रास, ऐंगस और नौकर-चाकर आते हैं ।)

डकन : यह गढ अच्छी जगह बना है; मंद, सुगंधित
हवा हमारे अंगो को सहलाती कैसी
प्यारी लगती !

बैंको : अबाबील जो गर्मी के मौसम मे आकर
मदिर-मंदिर पर मँडलाती, अपने सुंदर
नीड़ो से साबित करती है यहाँ स्वर्ग की

सुरभित सांसे आकर मनुहारें करती हैं
कोई रोशनदान, झरोखा, कोना, कोई
मौकेवाली जगह नही है, इस चिडिया ने
नही जहांपर अपने या अपने बच्चो के
सोने का झूला डाला है जहाँ कही यह
बहुतायत से चक्कर देती, अडे सेती,
मैने देखा है कि वहाँ की हवा बडी सुख-
कर होती है।

(लेडी मैकबेथ आती है।)

डंकन : देखो, आती आदरणीया
गृह की देवी ! (लेडी मैकबेथ से)—
हमें अनुसरण करनेवाला
प्रेम कभी हमको दुखदायी भी होता है,
फिर भी उसको प्रेम समझकर हम उसके
आभारी होते। यहाँ तुम्हारे लिए सबक है,
हम जो कष्ट तुम्हे दें उसके लिए दुआएँ
हमको देना, और हमारे प्रति आभारी
होना हमसे दुख पाकर भी।

लेडी मैकबेथ : महामहिम ने
आज हमारे घर को जितना भारी गौरव
दिया, अगर उसके बदले में हम अपनी
सेवाएँ दूनी और चौगुनी भी कर दें तो
हल्की होगी, तुच्छ रहेगी. हमे आपसे
पहले जो सम्मान मिला है, और हाल मे

उसमे जो कुछ वृद्धि हुई है, इस कारण हम
सदा आपका गुण गाते हैं।

डंकन : कहाँ कावडर-
पति है ? उनके चलने के वस वाद हम चले
और इरादा था हम उनसे पहले पहुँचें;
पर वे अच्छे घुडसवार है, और तुम्हारे
मधुर प्रेम से प्रेरित होते, एड लगाकर
घोडे को भी प्रेरित करते हमसे पहले
वे आ पहुँचे। सुदर, गुणवती, गृहदेवी,
आज रात के लिए हमे मेहमान वनाओ।

लेडी मैकवेथ : हम सेवक है सदा आपके, और हमारे
जो हैं, और हमारा जो कुछ, प्र।' हम खुद भी
राजमान्य के आगे हाजिर है, जव चाहे
तव मुजरा लें, फिर भी तो हम दिया आपका
ही लौटाते।

डंकन : आओ, अपना हाथ मुझे दो,
और हमारे मेजवान से हमें मिलाओ :
हमको उनसे वड़ा प्रेम है, औ' उनके प्रति
सदा हमारी कृपा रहेगी। यदि आज्ञा हो
तो, गृहदेवी।

[डकन लेडी मैकवेथ के हाथ का सहारा
लेता है: सव वाहर जाते हैं।

सातवाँ दृश्य

वही । गढ का कमरा

(बाजा बजता है मशालो की रोशनी होती है। बडा खानसामा और कई नौकर तश्तरियाँ तथा और सामान लिए एक ओर से आते हैं और मच पर होते हुए दूसरी ओर चले जाते हैं। इसके बाद मैकबेथ आता है।)

मैकबेथ : (अपने आप)

काम खत्म कर देने के ही साथ अगर यह
काम खत्म हो जाता तो यह अच्छा होता,
जल्दी ही यह काम खत्म कर डाला जाता.
यदि हत्या परिणामो पर काबू पा सकती,
औ' उनके वश मे आने के साथ सफलता
हाथो लगती, अगर सिर्फ आघात एक यह
आदि-अंत-सब कुछ अपने ही अंदर होता,
यहाँ, यहीपर, काल-नदी के इसी किनारे
पर, कछार पर, तो भविष्य-जीवन के तट पर
जो होता वह देखा जाता।—किंतु मामले
जो ऐसे हैं, उनमे अब भी यही फैसला
हो जाता है, ऐसा करके रक्तपात की
शिक्षा केवल देते है हम, जो प्रचार पा
शिक्षक पर ही हाथ उठाती · यह समान-कर
न्याय हमारे विष के प्याले के तत्वो को
स्वय हमारे अधर पुटो के साथ लगाता।

मेरे ऊपर उसकी रक्षा की दुहरी
जिम्मेदारी है : पहली, मै उसका सबधी,
उसकी रैयत, दोनो दृढ प्रतिकूल काम के,
फिर मैं उसका मेजबान हूँ, जिसे उचित है
द्वार बंद रख हत्यारो से उसे बचाना,
न कि उसपर खुद छुरी चलाना ।। और, अलावा
इसके, इस डकन ने अपने अधिकारो को
इस नर्मी से वहन किया है, अपने ऊँचे
पद पर इतना साफ रहा है, उसके सद्गुण
नरसिघो-सी मुखर जीभ के देवदूत बन
महापापमय उसकी हत्या के विरुद्ध प्रति-
वाद करेगे; औ' करुणा नवजात नग्न शिशु
के समान तूफान लाँघती, या नैसर्गिक
देव बालको-सी अवर के अलख वाहनों
पर सवार हो यह जघन्य कृति सबकी आँखो
में डालेगी, जिसपर आँसू की वह भीषण
झडी लगेगी, उसमे अंधड डूब जायँगे ।—
कोई ऐसा नही कि मेरे सुस्त इरादे मे
चुस्ती भर तेज़ बढ़ाए, बस मेरी
आकाशी हवसें अपने को ही फाँद-फाँदकर
एक दूसरे पर गिरती हैं ।—

(लेडी मैकबेथ आती है ।)

कहो क्या ख़बर ?

लेडी मैकबेथ : वह खा चुका, मगर तुम कमरे से क्यो निकले ?

मैकबेथ उसने मुझे बुलाया है क्या ?

लेडी मैकबेथ : और नही क्या ?

मैकबेथ . इस कुकर्म में अब हम आगे नही बढेगे
अभी हाल मे उसने मुझको मान दिया है,
औ' जनता से मुझे सुयश का वह कचन परि-
धान मिला है जिसे शान से मुझे पहनना
अभी चाहिए, इतनी जल्दी उठा फेकना
ठीक न होगा।

लेडी मैकबेथ : क्या वह आशा मदमाती थी
जिसे लगाया था तुमने अपने अगो से ?
क्या तब से वह सुप्त पडी थी और जगी अब
रूप-रग खोकर उमग से किए काम पर
अचरज करती ? और आज से इसी तरह का
प्रेम तुम्हारा मैं समझूंगी। क्या तुम अपने
काम और बल से वह बनने से डरते हो
जिसकी तुमने अपने लिए कल्पना की है ?
क्या तुम वह लेना चाहोगे जिसे मानते
हो तुम शीश-मुकुट जीवन का, औ' अपनी नज़रो
मे कायर बने रहोगे, 'कर न सकूंगा'
से 'करना चाहूँगा' के तलवे सहलाते ?
बिल्ली मछली खाएगी, पर पाँव न भीगे।

मैकबेथ : ज़रा कृपाकर धीमे बोलो। मैं वह सब कुछ
कर सकता हूँ जो कि मर्द को शोभा देता;

ज्यादा करनेवाला पैदा नही हुआ है ।

डी मैकबेथ : तब फिर वह नामर्द कहाँ था तुममे जिसने
मुझसे ऐसी साहसवाली वात कही थी ?
जब तुममे वह करने की हिम्मत थी तब तुम
भले मर्द थे, जो तुम थे उससे ज्यादा कर
दिखलाने मे मर्द और ज्यादा तुम बनते ।
तब न समय ही औ' न ठौर ही मेल खा रहे
थे, पर उनका मेल बिठाने को तुम दृढ़ थे :
अब वे अपने आप मिले हैं, औ' उनके जुट
जाने पर तुम विखर गए हो । दूध पिलाया
है मैंने औ' खूब जानती पय पीते शिशु
को दुलराना कैसा ममतामय होता है,
लेकिन कस्द अगर कर लेती, जैसा तुमने
यह करने के लिए किया, तो जब वह मेरी
ओर देख मुसकाता होता, उसके दंत-
रहित मुख से मैं अपना चूचुक झटक हटाती,
और पटक उसका भेजा वाहर कर देती ।

मैकबेथ : अगर हुए इसमे हम असफल,

लेडी मैकबेथ : हम औ' असफल !
मौके पर बस हिम्मत को मत ढीली करना,
असफल कभी नही होगे हम । सोता होगा
जब डंकन तब (सारे दिन के कड़े सफर के
वाद नीद गहरी सोएगा, स्वाभाविक है ।)

उसके दोनो रखवालो को मैं शराब के
प्याले पर प्याले दे-देकर ऐसा मद मे
चूर करूँगी, उनकी सुध-बुस, जो दिमाग पर
पहरा देती, भाप की तरह उड जाएगी,
और खोपडी, तर्क-वितर्क जहाँ से होता,
भब्के की हाँडी-सी होगी। जब मदिरा मे
शराबोर वे सुअरो-से खर्राटे भरते
वेखबरी मे मुर्दो-जैसे सोते होगे,
तब अनरक्षित डकन पर तुम औ' मैं दोनो
ऐसा क्या जो कर न सकेंगे ? ऐसा क्या जो
उसके माते रखवालो पर मढ न सकेंगे ?
वही हमारे घोर घात के दोषी होगे।

मैकबेथ . केवल नर वच्चो को जन्मो, क्योकि तुम्हारी
परुष कोख मे सिर्फ पुरुष ही ढल सकते हैं।
जब उसके कमरे के दो सोनेवालो पर
खून पोत देगे हम, उनकी खास कटारे
इस्तेमाल करेंगे जब हम, कौन नही तब
मानेगा यह काम उन्ही का ?

लेडी मैकबेथ जब हम उसके
मरने पर ज़ोरो से रो-धोकर अफसोस
दिखाएँगे तब, बात दूसरी माने, किसमे
हिम्मत होगी ?

मैकबेथ : मैंने तै कर लिया, साथ ही

इस भयकारी काम के लिए मेरी रग-रग
ने तैयारी कर ली है। बस, अब तुम जाओ,
बढ़िया हाव-भाव से घड़ियों को भुठलाओ;
झूठे मुख से झूठे मन की बात छिपाओ।

[दोनो बाहर जाते हैं

दूसरा अंक

पहला दृश्य

वही। गढ का आँगन

(आगे-आगे मशाल हाथ में लिए फ़्लिएस आता है,
पीछे-पीछे वैंको।)

वैंको . बेटे, कितनी रात जा चुकी ?

फ़्लिएंस चाँद ढल चुका, मैंने घटा नही सुना है।

वैंको बारह बजे चाँद ढलता है।

फ़्लिएंस : श्रीमन्, मुझको
लगता ज्यादा रात हो चुकी।

वैंको : लो तलवार, जरा। नभ हाथ खीचकर चलता;
अपने सारे दीप बुझाए। —इसको भी लो।
(ढाल भी फ़्लिएस को देता है।)
नीद-भरी मेरी पलकें भारी-भारी है,
फिर भी सोना नही चाहता स्वर्ग शक्तियो !
बिस्तर पर जाने पर जो कुविचार हृदय मे
उठते, उनका शमन करो !—तलवार मुझे दो।—
(आगे-आगे मशाल हाथ में लिए सेवक आता है,
पीछे-पीछे मैकबेथ।)
कौन आ रहा ?

मैकबेथ :　　　　मित्र तुम्हारा ।

बैंको :　　　　　　　श्रीमन्, क्या अब

तलक न सोए ? महाराज कब के जा लेटे :
बेहद खुश थे, और उन्होने सभी तुम्हारे
दास-दासियो को बख्शीशे बड़ी-बड़ी दी ।
पत्नी को यह रत्न भेंट मे भेजवाया है,
कहलाया है, दयामयी गृह की देवी को
दिया जाय यह; और, परम संतुष्ट, पलँग पर
अब सोए है ।

मैकबेथ :　　　　पहले से तैयार न थे हम,

इससे आव-भगत मे त्रुटियाँ बहुत रह गई,
नही बडी विधि से हम उनका स्वागत करते ।

बैंको : ठीक हुआ सब । मैने तीनो भूत-भगिनियो
को कल रात स्वप्न मे देखा : तुमपर उनका
कहा हुआ कुछ सच उतरा ।

मैकबेथ :　　　　　　　मेरे दिमाग से

उतर गई वे : तिसपर भी घटा भर हो तो
हम-तुम इसके बारे मे कुछ बात करेंगे,
वक्त कभी क्या दे सकते हो ?

बैंको :　　　　　　　जब तुम चाहो ।

मैकबेथ : जब ऐसा हो, तब यदि मेरी तरफ रहे तुम
तो सम्मान बड़ा पाओगे ।

बैंको :　　　　　　　अगर बढ़ाने

की कोशिश मे जो है उससे हाथ न धोऊँ,

लेकिन अब भी मेरा अंत:करण शुद्ध है,
राजभक्ति मेरी अविचल है, बात सुनूंगा।

मैकबेथ जाकर अब आराम करो तुम!

बैंको : धन्यवाद है,
तुम भी अब जाकर सो जाओ।

[बैंको और फ्लिएस जाते हैं

मैकबेथ . (सेवक से) जा, अपनी मलकिन से कह, जब मेरा प्याला
बन जाए, मुझको घंटी दें। जा, तू सो जा।

[सेवक जाता है

मैकबेथ . यह कटार है क्या जो आगे देख रहा हूँ,
मेरी ओर मूठ है जिसकी? आ, मैं तुझको
पकड़ूँ—हाथ नही आई तू, फिर भी तुझको
देख रहा हूँ। घातक छलना, क्या तू केवल
दिखती भर है, छुई न जाती? या कटार तू
केवल मन की झूठी रचना, जो दिमाग की
गर्मी से उत्पन्न हुई है? अब भी तुझको
देख रहा हूँ उसी शक्ल की, उसी धातु की
जिसकी मेरी, जो मैं बाहर खींच रहा हूँ।
तू दिखलाती है पथ जिस पर मै जाता था,
ऐसा ही हथियार काम में लाने को था।—
मेरी सब इंद्रियाँ हँस रही हैं आँखो पर,
या ये सब पर, अब भी तुझको देख रहा हूँ,
औ' अब तेरी धार-मूठ पर बूँद रक्त की,
जो पहले मौजूद नही थी।—ऐसी कोई

चीज़ नहीं है । मेरा खूनी काम आँख के
आगे मूर्तिमान होता है ।—आधी दुनिया
के ऊपर अब प्रकृति मरी-सी, औ' अभिशापित
निद्रा को दु:स्वप्न सताते : जादू-टोना
पीत मसानी देवी को बलिदान चढ़ाता;
हत्या का कंकाल भेड़िए की बोली से
चौकन्ना हो, जो उसका संतरी, वक़्त
बतलानेवाला, ऐसे दबे हुए पांवों से,
कामातुर के बलात्कारकारी कदमों से,
भूत की तरह, अपने लक्ष्य की तरफ़ जाता ।—
ओ सुस्थिर, अडोल, अचला, तू मत सुन मेरी
पद-चापों को, कहाँ, किधर को वे जाती है,
क्योंकि मुझे डर, तेरे पत्थर बोल न मेरा
भेद खोल दें, भंग न कर दें इस अवसर पर
छाए भीषण सन्नाटे को जो कि काम के
लिए जरूरी है । धमकी ने किसको मारा ?
बातों से बुझ जाता कामों का अंगारा ।

(घंटी बजती है ।)

गया कि खत्म हुआ, घंटी ने किया इशारा ।
डकन, मत सुन इसे; क्योंकि इसकी यह टन-टन
तुझे स्वर्ग का, या कि नरक का है आमंत्रण ।

दूसरा दृश्य

वही

(लेडी मैकबेथ आती है ।)

लेडी मैकबेथ . जिससे वे बेहोश हुए, बाहोश हुई मैं,
जिससे वे बुझ गए, मुझे दी उसने ज्वाला ।
(नेपथ्य में उल्लू की आवाज़)
सुनो ! षो ई ! यह उल्लू था जो चीख पडा था,
जो कि मौत की घुडकी देता, और रात से
कर्कश स्वर मे विदा माँगता । कर-धर मे वे ।
(नेपथ्य में खर्राटे भरने की आवाज़)
द्वार खुले हैं, और नशे मे गच रखवाले
खर्राटे भरकर अपनी ज़िम्मेदारी पर
व्यग कर रहे हैं मैंने उनके प्यालों मे
ऐसी जडी मिला दी, मौत-ज़िंदगी उनपर
दावे करती कि वे मर चुके, कि वे जी रहे ।

मैकबेथ . (नेपथ्य से) कौन आ रहा है ? क्या कोई !

लेडी मैकबेथ . अरे मुझे भय !
जाग पडे वे और काम सध नही सका है ।—
काम नही, नाकामियाब हो जाना हमको
नष्ट करेगा —पी ई—उनकी खुली कटारे
मैंने ऊपर ही रख दी थी, पाई होगी ।—
सोते मे वह अगर न लगता, जैसे मेरा

पिता, काम खुद मैं कर देती !—ओ, मेरे पति !
(मैंकवेथ आता है ।)

मैंकबेथ : काम खत्म कर डाला मैने ।—क्या तुमने कुछ
नही सुनी आवाज़ ?

लेडी मैंकबेथ : सुनी उल्लू की चीखें,
और झींगुरो की झनकारे । तुम कुछ बोले ?

मैंकबेथ . कब ?

लेडी मैंकबेथ : पल भर पहले ।

मैंकवेथ : जब नीचे उतर रहा था ?

लेडी मैंकबेथ : तभी ।

मैंकबेथ : सुनो, पी ! कौन साथ के कमरे मे है ?

लेडी मैंकबेथ : डोनलबेन ।

मैंकबेथ : (हाथ देखकर) देखना इसको दर्दनाक है ।

लेडी मैंकबेथ ' दर्दनाक इसको कहना है ख़ामख़याली ।

मैंकबेथ : सोते-सोते एक हँस पड़ा और दूसरा
बोला, 'हत्या !' एक दूसरे से उठ बैठा :
खड़ा रहा मैं उन्हे अनकता, किंतु प्रार्थना
करके फिर से लेट गए वे और सो गए ।

लेडी मैंकबेथ : दो हैं एक साथ कमरे मे ।

मैंकवेथ : जब दोनों ने
मेरे क्रूर कसाई के हाथो को देखा,
एक पुकार उठा, 'प्रभु रक्षा करे हमारी !'
औ' बोला, 'आमीन,' दूसरा । उन्होने कहा
जब, 'प्रभु रक्षा करे हमारी', कही न वे सुन

लें इस डर से मेरे मुँह 'आमीन' न निकला ।

लेडी मैकबेथ इन बातो को इस गहराई से मत सोचो ।

मैकबेथ : पर किस कारण मेरे मुँह 'आमीन' न निकला ?
मुझको रक्षा की विशेष आवश्यकता थी,
पर 'आमीन' गले मे मेरे अटक गया था ।

लेडी मैकबेथ : इन कामो को इस प्रकार से नही सोचते
ऐसा करने से हम पागल हो जाएँगे ।

मैकबेथ मुझे लगा, आवाज़ एक चिल्लाकर कहती,
'निद्रा त्यागो, मैकबेथ निद्रा का वध करता',—
निद्रा जो भोली-भाली है, निद्रा जो चिंता
के उलझे तागो को सुलझाया करती,
जो कि मरण दिन के जीवन का, ताप-तप्त का
स्नान, चुटीले मन का मरहम, महा प्रकृति का
उत्तम व्यजन, जीवन के जेवनार-थाल का
जो कि परम पौष्टिक पदार्थ है ,—

लेडी मैकबेथ : मतलब क्या है ?

मैकबेथ फिर भी वह सब घर से चिल्लाकर कहती थी,
'निद्रा त्यागो !' 'ग्लेमिस ने निद्रा का वध कर
डाला, इससे और कावडर सो न सकेगा,
आगे मैकबेथ सो न सकेगा !'

लेडी मैकबेथ · कौन इस तरह चिल्लाता था ? योग्य राव, क्यो
तुम दिमाग के इस फतूर पर सोच-सोचकर
अपनी तनकर खडी शक्ति की कमर झुकाते ?
जाओ, पानी लो, औ' इन हाथो पर बैठी

गंद-गवाही को धो डालो ।—साथ कटारे
क्यो ले आए ? इनको वही छोड़ आना था :
ले जाओ इनको, औ' सोते रखवालो पर
खून पोत देना ।

मैकवेथ : मै तो अब जा न सकूंगा :
मैंने जो कुछ किया सोचकर मै डरता हूँ;
फिर से उसे देखने की अब ताब नही।

लेडी मैकवेथ : बे-
दम के बूदम ! मुझे कटारें दो । सोए औ'
मरे सिर्फ तस्वीरो-से हैं, चित्र-लिखित
भूतों से केवल बच्चों की आँखे डरती हैं ।
अगर खून बहता होगा तो रखवालों का
मुँह रँग दूँगी, जिससे यह अपराध उन्ही का
समझा जाए ।

[चली जाती है

(नेपथ्य में दरवाजा पीटने की आवाज़)

मैकवेथ : कौन पीटता है दरवाज़ा ?—
मुझको क्या हो गया कि हर आवाज़ डराती ?
हाथ बने क्या ? उफ ! ये मेरी आँख नोचते :
जो मेरे हाथों में खून लगा उसको तो
महा वरुण का सारा पारावार नही धो
सकता । यही नही, ये मेरे हाथ करेंगे
जलोच्छलित-उच्छ्वसित सिंधुओं को रक्तारुण,
जो कि हरे हैं, लाल बनेंगे ।

(लेडी मैकवेथ वापस आती है ।)

लेडी मैकबेथ : रग तुम्हारे हाथो का मेरे हाथो पर,
लेकिन ऐसे कच्चे दिल से मुझे घृणा है।
सुनो, दक्षिणी दरवाजा कोई खडकाता '—
चलो, चलें कमरे के अदर । थोडे जल से
हमपर से दायित्व काम का धुल जाएगा .
यह कितनी आसान बात है ! तुम्हे अकेला
छोड तुम्हारी दृढता भागी ।—
(नेपथ्य में दरवाजा पीटने की आवाज)

सुनो, और
खडकन, जा रतजामा पहनो, हमे निकलना
पडा अगर बाहर, हम जगते साबित होगे ।
इतनी बुरी तरह मत ख्यालो मे खो जाओ ।

मैकबेथ : अपना काम यादकर अपने को भूले ही
रहना अच्छा ।
(नेपथ्य में दरवाजा पीटने की आवाज)

डकन को तू दरवाज़े को
पीट जगा दे काश कि तू ऐसा कर सकता
[दोनों चले जा

तीसरा दृश्य

वही

(दरवान आता है।)

दरवान . जरूर कोई दरवाज़ा पीट रहा है ! जो व
दोजख का दरवान हो तो उसको फाटक

कुजी ही घुमाते रहना पड़े। (दरवाज़ा पीटने की आवाज़) पीटो, पीटो, पीटो ! शैतान के नाम पर वोलो तो कि हो कौन ?—आप वनिए है, जिन्होने भाव गिरने के अदेशे मे फाँसी लगा ली . खूब आए; अँगोछे अपने पास काफी रखिएगा, यहाँ पसीना ज्यादा आता है। (दरवाजा पीटने की आवाज) पीटो, पीटो ! शैतान के नाम पर वोलो तो कि हो कौन ? ईमानहू, आप है दुरंगी, जो इस पलड़े से उसके, और उस पलडे से इसके खिलाफ हलफ उठाते है; जिन्होने खुदा के नाम पर काफी गद्दारी की, लेकिन वहिश्त को चकमा न दे मके : खैर, अंदर आइए, दुरंगी जी ! (दरवाज़ा पीटने की आवाज़) पीटो, और पीटो ! अव कौन है ?—ईमानहू, आप हैं अंग्रेज़ दर्जी जो फिरंगी जुराव से तागा चुराने की वजह से यहाँ आए हैं : दर्जी जी, अदर आइए, और मौज से अपनी इसतिरी गरमाइए। यहाँ आग इफरात है। (दरवाज़ा पीटने की आवाज़) पीटो, पीटो ! यहाँ कभी चैन नही ! आप कौन हैं ?—लेकिन दोजख में इतनी ठड कहाँ। अव मुझसे दोजख की दरवानी न होगी : मैने सोचा था कि ऐसे हर पेशे के कुछ लोगों को यहाँ जमा करूँगा जो फूलों की राह से जहन्नुम की आग मे जाते हैं। (दरवाज़ा

पीटने की आवाज) सब्र करो, सब्र करो वराय मेहरबानी, दरबान की बख्शीश न भूल जाना ।

(दरवाजा खोलता है ।)

(मैकडफ और लेनाक्स आते हैं ।)

मैकडफ : कहो दोस्त, क्या रात देर से लेटे थे जो
अभी तलक सुस्ती छाई है ?

दरवान ईमानहू, जनाब, रात के तीन बजे तक
हम सब मदिरा-पान-गान मे मगन-मस्त थे,
और तीन बाते हैं जो मदिरा से बढती ।

मैकडफ . कौन तोन बातें हैं जो मदिरा से बढती ?

दरवान : जनाव, नाक की रगत, आँखो की नीद और पेशाव । काम वासना को, जनाब, यह बढाती, भी है और कम भी करती है वासना को वढाती है, काम को कम करती है । इसलिए हम यह कह सकते हैं कि ज्यादा शराब काम वासना के लिए दुरगी का काम करती है . यह उसे वनाती भी है और विगाडती भी है, यह उसे लुहकारती भी है और खीच भी लेती है, यह उसकी मनुहार करती है और उसे निराश भी, यह उसको चुस्त करती है और उसे सुस्त भी, और अत मे उसे नीद का चकमा दे, चित कर चल देती है ।

मैकडफ तो मेरा ख्याल है कल रात शराव ने तुम्हे
चित कर दिया था ।

दरवान . कर तो दिया था, जनाव, चारो खाने .

लेकिन मैंने पट से उसे पटकान दी, और मैं समझता हूँ कि मैं ही तगड़ा पड़ा; गो उसने दो-तीन बार मेरे पाँव उखाड़ दिए, फिर भी मैंने एक ऐसा दाँव लगाया कि उसे पछाड़ फेका।

मैकडफ़ . तुम्हारे मालिक अभी जगे कि नही ?

(मैकबेथ आता है।)

दरवाज़ा खडकाने से उठकर वे आते।

लेनाक्स : नमस्कार, श्रीमन् !

मैकबेथ : दोनो को नमस्कार है।

मैकडफ़ : महाराज क्या उठ बैठे हैं ?

मैकबेथ : अभी तो नही।

मैकडफ़ : मुझको यह आदेश मिला था, तड़के पहुँचूँ: देर हो गई।

मैकबेथ : आओ, उनके पास ले चलूं।

मैकडफ : तुम इन कष्टो को सुख माना करते हो, यह मैंने माना, किन्तु कष्ट तो है अवश्य ही।

मैकबेथ : जिस मेहनत से हम खुश होते वह थकान को दूर भगाती। द्वार इधर है।

मैकडफ : मुझे हिचकना नही चाहिए, महाराज का हुक्म यही था।

[चला जाता है

लेनाक्स : महाराज क्या आज यहाँ से कूच करेगे ?

मैकबेथ : निश्चय : कम से कम उनकी मंशा ऐसी थी।

लेनाक्स बुरी रात थी हम लेटे थे जहाँ चिमनियाँ
भहराकर भठ गई, सुनाई पडी हवा मे
करुण पुकारे और मौत की अजब कराहें,
जैसे कोई भीषण स्वर मे दुखद घडी के
गर्भ मे छिपी दुर्घटनाओ औ' विस्फोटो
की भविष्यवाणी करता हो। उल्लू चीखा
किया रात भर कुछ कहते थे धरती ऐसी
काँपी जैसे कोई कपज्वर मे काँपे।

मैकबेथ रात चली थी आँधी।

लेनाक्स मुझको याद नही है
मैने ऐसी रात कभी पहले देखी है।

(मैकडफ आता है।)

मैकडफ गजब हो गया! गजब हो गया! गजब हो
गया!
किस मुँह, किस दिल से बतलाया जाय क्या
हुआ!

मैकबेथ-लेनाक्स . बात क्या हुई?

मैकडफ . सारा सत्यानाश हो गया!
महा पापकारी हत्या ने प्रभु के पावन
मदिर का विध्वम कर दिया, और वहाँ से
प्राण-प्रतिष्ठित-प्रतिमा गायब कर दी है!

मैकबेथ : क्या
कहा? प्राण?—

लेनाक्स : क्या महामहिम से अर्थ तुम्हारा?

मैकडफ़ : जा कमरे मे, घोर घिनौना दृश्य देखकर
अपनी-अपनी आँख फोड़ लो।—कोई मुझसे
कुछ मत पूछो, जाओ देखो, बात करो फिर।

[मैकबेथ और लेनाक्स चले जाते हैं

खतरे का घंटा दो !—हत्या औ' गद्दारी !
बैंको, डोनलबेन ! मैलकम ! जागो, जागो !
सुख की निद्रा त्यागो, जो है मौत की नकल,
असल मौत को देखो!—देखो, उठो, क़यामत
की सूरत को। जागो, जागो ! मैलकम !
बैंको !
बिस्तर को क़ब्रों से निकलो औ' प्रेतो की
भाँति चलो यह काड देखने ! घटा पीटो !

(नेपथ्य में घंटा बजता है, नरसिंघो की आवाज़ होती है।)

(लेडी मैकबेथ आती है।)

लेडी मैकबेथ : कौन ज़रूरी काम आ पड़ा
जो घर के सोनेवालों को नरसिंघों के
कनफट स्वर से जगा यहाँपर बुलवाया है ?
बोलो, बोलो !

मैकडफ देवि, दयामयि, तुम्हे सुनाई
जानेवाली बात नही है : जो कहनी है
मुझे अगर नारी के कानो मे पड़ जाए
तो वह उसकी मौत बनेगी।

(बैंको आता है।)

बैंको ! बैंको !

हत्या कर दी गई हमारे महाराज की !

लेडी मैकबेथ : हाय ! हमारे घर ?

बैंको : निर्ममतापूर्ण कही भी।—
दया करो, प्यारे डफ, अपनी बात पलट दो,
कहो कि ऐसा नही हुआ है।

(मैकबेथ और लेनाक्स आते हैं।)

मैकबेथ : इस घटना से सिर्फ एक घंटे पहले मर
जाता तो अपने को सुख से जिया मानता,
क्योंकि इस घडी से जीवन में बडी चीज कुछ
नही रह गई; सिर्फ रह गए गुड़िया-गुड्डे,
गौरव और गुमान उठ गया, जीवन-मदिरा
खीच ली गई, औ' अब जग की मधुशाला में
डीग मारने को सीठी भर बची हुई है।

(मैलकम और डोनलवेन आते हैं।)

डोनलवेन : क्या गडबड है ?

मैकबेथ : तुम गडबड मे, और बेखबर :
दौड रहा जो खून तुम्हारी नस-नाडी मे
उसका पूत, प्रधान स्रोत अवरुद्ध हो गया,
मूलोद्गम अवरुद्ध हो गया।

मैकडफ : हत्या कर दी
गई तुम्हारे पुण्य पिता की।

मैलकम : किसके द्वारा ?

लेनाक्स जो कमरे मे थे, ऐसा ही कहना होगा,
उनके द्वारा, उनके चेहरे-हाथ खून से

सने हुए थे; उसी तरह से रँगी कटारें
भी तकियों पर पडी हुई थी :
भौचक-से वे आँख फाड़कर देख रहे थे,
हर मनुष्य को उनके हाथो से ख़तरा था।

मैकबेथ : फिर भी पश्चात्ताप मुझे है, गुस्से मे आ
मैने उनको मार गिराया।

मैकडफ : उन्हे मार क्यो
डाला तुमने ?

मैकबेथ : एक साथ हो सकता कोई
ज्ञानवान भी, परेशान भी; सहनशील भी,
क्रोधातुर भी; राजभक्त भी, उदासीन भी ?
कोई नही!: प्रेम ने मुझको इतना पागल
बना दिया था, यह न हो सका ठहरूँ, सोचूँ।—
इधर पड़ा था डंकन का तन रजत वर्ण का,
स्वर्ण रक्त की धारे जिसपर पड़ी हुई थी,
जिसपर गहरे घाव प्रकृति मे सेंध की तरह
दीख रहे थे, जिनसे होकर ध्वंस घँसा था :
उधर खड़े थे हत्याकारी अपने वाने
के रंगों मे डूबे, उनकी खुली कटारें
खून से सनी। अपने दिल मे कौन मुहब्बत
रखनेवाला, जब उस दिल मे उसको साबित
कर सकने की हिम्मत भी हो, अपने पर
काबू रख सकता ?

चौथा दृश्य

गढ के बाहर

(एक बूढे आदमी के साथ रास आता है ।)

बूढ़ा आदमी तीन बीस के ऊपर दस बरसो की मुझको
याद बनी है, मैंने इतने लबे अरसे
मे देखी हैं कितनी ही आफत की घडियाँ,
अद्‌भुत बातें, लेकिन इस दुखभरी रात ने
मात कर दिया है उन सबको ।

रास मेरे बाबा,
देखो मानव-करनी से क्रोधित नभ कैसा
उसके पापी रगमच पर घिरा खडा है !
घडी देखने से दिन है, पर निशा अँधेरी
गगन-पथ-चारी सूरज का गला दबाए ।
रात छा गई है अथवा दिन लजा रहा है,
जो धरती के मुख पर तम की चादर फैली,
जबकि चाहिए जीवन-किरणे उसको चूमें ।

बूढ़ा आदमी : यह ऐसा अजीब, जैसा वह काड हुआ है ।
पिछले मगल को मैंने देखा, चूहो पर
जीनेवाला उल्लू एक बाज़ पर झपटा
औ' उसने उसकी गर्दन धर तोडी जब वह
तेज़ चाल से धुर ऊँचाई पर उडता था ।

रास : औ' यह जितना अद्‌भुत है, उतना ही सच है—
डकन के घोडे मस्ताने, तेज तुखारी,

ताज़ी तड़पे, तोड़ अस्तबल बाहर झपटे
वँधे न बाँधे, जैसे वे विरुद्ध मानव के
युद्ध छेड़ने को उद्यत हो ।

बूढा आदमी . और यह सुना
गया उन्होने एक दूसरे को खा डाला ।

रास : ठीक सुना, यह वड़ा अचंभा मैने अपनी
आँखो देखा । मैकडफ इधर चले आते हैं ।

(मैकडफ आता है ।)

भाई, अब क्या हाल-चाल है ?

मैकडफ़ : नही देखते ?

रास : पता चला कुछ, किसने खूनी काम किया है ?

मैकडफ : उन लोगों ने, मैकवेथ ने जिनके सिर काटे ।

रास . दिन जल जाए ! उनको इससे क्या मिलना था ?

मैकडफ : उन्हे किसीने उकसाया था । महाराज के
दोनो वेटे मैलकम, डोनलवेन निकलकर
चोरी-चोरी भाग गए है, जिससे यह शक
किया गया है हत्या थी करतूत उन्ही की ।

रास : अनहोनी-सी यह भी : सीमाहीन हवस, जो
अपने जीवन-दाता को ही हड़प जायगी !—
तव तो यह ज्यादा मुमकिन है मैकवेथ को ही
राज मिलेगा ।

मैकडफ : घोषित उसका नाम हो चुका, राज्यारोहित
होने को इस्कोन गया भी ।

रास : और कहाँ है
डकन का शव ?

मैकडफ : उसे ले गए काल्मेकिल को;
उसके कुल के पूर्व जनो की पावन कब्रें
वही बनी हैं।

रास तुम इस्कोन नही आते हो ?

मैकडफ . नही, बंधु, मैं फाइफ जाता।

रास और उधर मैं।

मैकडक अच्छा, सब कुछ वहाँ ठीक हो —विदा
अभी तो।
नए राज से भला पुराना ही न कही हो।
[वाहर जाता है

रास . बाबा ! मेरा नमस्कार लो।

बूढ़ा आदमी प्रभु की करुणा साथ तुम्हारे, सबके जाए,
जो कि शूल को फूल, शत्रु को मित्र वनाएँ।
[दोनो वाहर जाते है

तीसरा अंक

पहला दृश्य

फ़ारेस । महल का कमरा

(बैंको आता है ।)

बैंको : तुझे भूत-भामिनियों ने जो कहा सब फला;
राव, कावडर, ग्लेमिस का, राजा भी अब तू :
और मुझे आशका है तूने इसके हित
सबसे गर्हित काम किया है, तो भी ऐसा
कहा गया था राज-मुकुट यह तेरे वंशज
रख न सकेंगे; भावी के राजो का मैं ही
मूल पुरुष हूँ । यदि उनके मुख से सच निकला,
(जैसे तुझपर, मैकबेथ, उनकी वाणी उतरी),
तो क्यों तुझपर सिद्ध हुई बातो से मै भी
उन्हें न अपना भूत-भविष्यद्वक्ता मानूँ,
औ' आशा से कदम बढाऊँ ? पर, बस अब, चुप ।

(तुरही बजती है । मैकबेथ राजा के, एव
लेडी मैकबेथ रानी के रूप मे, तथा
लेनाक्स, रास, सरदार और
नौकर-चाकर आते हैं ।)

मैकबेथ : यही खास मेहमान हमारे ।

लेडी मैकबेथ · अगर हमारे
राजभोज मे ये रह जाते तो निश्चय ही
बडी कमी उसमे रह जाती, और अशोभन
सब कुछ लगता ।

मैकबेथ . आज रात को एक बडी दावत हम देगे,
श्रीमन्, कृपा करें आने की ।

बैंको : राजमान्य की
जो आज्ञा हो, मेरे सब कर्तव्य उसीके
साथ सदा के लिए अटूट-सुदृढ बधन मे
बँधे हुए हैं ।

मैकबेथ कही तीसरे पहर सवारी जाएगी क्या ?

बैंको हाँ, श्रीमन् !

मैकबेथ . वर्ना सध्या के परिषद् मे भी
हमे आपकी शुभ सलाह की आवश्यकता,
जो कि सदा सतुलित, लाभकर सिद्ध हुई है,
पर, अब कल । क्या दूर सवारी कही जायगी ?

बैंको हाँ, श्रीमन्, जो अभी चला तो सध्या-भोजन-
वेला तक वापस आऊँगा, घोडे अगर न
तेज़ बढे तो, शायद घटा या दो घटा
रात का लगे ।

मैकबेथ : . याद रहे दावत में आना ।

बैंको · श्रीमन्, मैं जरूर पहुँचूंगा ।

मैकबेथ . हमने सुना हमारे हत्याकार भतीजे
आयरलैड और इग्लैड विराज रहे हैं,

पितृघात स्वीकार न करके वेबुनियादो
मनगढत से लोगो के कानो को भरते ।
पर, इसपर कल, जब इसके ही साथ राज के
और मामलो पर हम साथ विचार करेंगे ।
तो अपने घोडे मंगवाएँ : औ' तब तक के
लिए विदा जब तक न रात वापस आते है ।
क्या फ्लिएस को अपने साथ लिये जाते हैं ?

बैंको . हाँ, श्रीमन्, अब समय आ गया है जाने का ।

मैकबेथ . सधी चाल से, तेज, आपके घोडे जाएँ,
बैठ ज़ीन पर एड लगाएँ और विदा हों ।—

[बैंको जाता है

(नेपथ्य से घोडो की टापो की आवाज़ आती है ।)

सात बजे तक जैसे जिसका जी हो अपना
वक्त विताए, फिर मिलकर आनंद बढेगा :
सध्या-भोजन तक हम सबसे अलग रहेगे :
तब तक सबका ईश्वर मालिक !

[लेडी मैकबेथ तथा सब सरदार बाहर जाते है

(सेवक से) ओ रे, सुन तो ।
क्या वे दोनो मुझसे मिलना चाह रहे है ?

सेवक : हाँ, मालिक, वे सिंहद्वार पर खड़े हुए है ।

मैकबेथ : उन्हें बुला ला ।

[सेवक बाहर जाता है

ऐसे रहना बेमानी है ।
मानी है निर्द्वन्द्व, निरापद हो रहने के ।—

हमको बैंको का भारी भय लगा हुआ है,
औ' उसकी राजसी प्रकृति में ऐसा रोब-
दाब है जिससे डरा चाहिए · बडा हिम्मती
है वह, लेकिन अपने मन की निर्भयता के
साथ बुद्धि भी रखता वह जो उसके बल को
सँभल-सँभलकर कदम बढाना सिखलाती है।
एक वही है जिसकी सत्ता मुझे अखरती :
उसके आगे मेरी प्रतिभा दबी हुई है,
मार्क ऐंटनी की जैसे सीजर[1] के आगे।
भूत-भगिनियो ने जब मुझको राजा कहकर
पहले-पहल पुकारा, उसने उनको डाँटा
और कहा, 'कुछ मुझे बताओ।' पैगवर की
भाँति उन्होने तब उद्घोषित किया कि भावी
राजो की वशावलि का वह मूल पुरुष है।
मेरे सिर पर रक्खा निष्फल राज-मुकुट यह
औ' मुट्ठी मे राज-दड निर्वीर्य कि जिसको
औरो की सतान छीन ले, मेरा कोई
पुत्र न हो उत्तराधिकारी। यदि ऐसा है,
तो बैंको के वंश के लिए मैंने अपना

---

१ सीज़र—जूलियस सीजर (१०२–४४) ईसा पूर्व, रोम-सम्राट्, शेक्सपियर ने उसपर एक नाटक लिखा है। ऐंटनी—सीजर का सेनापति। मिस्र की रानी क्लिओपाट्रा और ऐंटनी की प्रेम-कथा को शेक्सपियर ने अपने एक नाटक का विषय बनाया है।

धर्म बिगाडा; उसके कारण मैने कृपा-
निकेतन डकन की हत्या की; मैने अपने
शांति-पात्र मे गरल उँडेला, केवल उसकी
खातिर, और चिरतन अपनी निधि दे डाली
दानव को जो मानवता का महा शत्रु है,
राज उन्हे देने को, वैको के वच्चो को !
कभी न ऐसा हो, आ दाएँ, भाग्य, पक्ष ले
मेरा निर्णयकारी रण तक !—कौन खड़ा है ?

(दो हत्यारो के साथ सेवक आता है।)

(सेवक से)—

वाहर जाओ, वही रहो जव तक न बुलाऊँ ।

[सेवक वाहर जाता है

कल ही तो हमने तुमसे कुछ वाते की थी ।

पहला हत्यारा : राजमान्य की वडी कृपा थी ।

मैकवेथ : अच्छा, तो क्या
तुमने मेरी वातो पर कुछ सोचा ? जानो,
गए दिनो मे जिसने तुम्हे दरिद्र वनाया,
वह था वैको, मेरा कोई दोष नही था ।
अपनी पिछली वातचीत मे मैंने इसको
साफ किया था, और इसे तुमने माना था,
कैसे तुम्हे गया भुठलाया और सताया;
क्या हथकडे किए गए औ' किसके द्वारा;
और कई ऐसी वातें है जिनको सुनकर

बेगैरत, खब्तुलहवास भी समझ जायगा,
ये बैको की करतूतें थी ।

पहला हत्यारा हमे आपने
बतलाई थी,

मैकबेथ . बतलाई थी, और आज की
मुलाकात मे मुझे और कुछ बतलाना है ।
क्या स्वभाव मे तुमने इतनी सहनशीलता
धारण करली, इसको यो ही जाने दोगे ?
क्या तुम ऐसे धर्मध्वज हो, इस सज्जन की
औ' इसके बच्चो की कुशल मनाओगे तुम,
जिसने अपनी विकट भुजा से तुम्हे कब्र के
निकट झुकाया, और तुम्हारी सतानो को
सदा के लिए रक बनाया ?

पहला हत्यारा हम मनुष्य है ।

मैकबेथ . निश्चय मानव की श्रेणी मे आते हो तुम,
जिस प्रकार जगली, गली के और पालतू,
झबरे, कबरे, भूरे, पनिहे और दुनस्ले,
सब कुत्ते ही कहलाते हैं गुण दिखलाने-
वाली सूची, पर, उनमे विभेदकर कहती
चुस्त, सुस्त, चालाक, पाहरू और शिकारी,
अलग-अलग वरदान मिला सभरित प्रकृति से
जिसको जैसा, उसको वैसा, इसके कारण
कुछ विशेषता उसमे जुडती, बाकी रहते
सभी धान बाईस पसेरी, इसानो का

यही हाल है। अब, सूची मे अगर तुम्हारा
कोई दर्जा, और नहीं तुम मानवता की
निम्न कोटि मे, तो बतलाओ; और तुम्हें मै
काम एक ऐसा सौपूंगा जिसे अगर तुम
कर डालो तो शत्रु तुम्हारा मिट जाएगा,
मेरे दिल की प्रीति-निकटता तुम्हे मिलेगी :
वह जीता है जब तक मेरा जीना दूभर,
वह मर जाता है तो मुझको शाति मिलेगी।

दूसरा हत्यारा : मेरे मालिक, मै वह हूँ जो इस दुनिया के
कुटिल प्रहारो से, धक्को से इतना जला-
भुना है, उसको इसकी कुछ परवाह नही वह
जग को बेइज्ज़त करने को क्या करता है।

पहला हत्यारा : और दूसरा मै हूँ, ऐसे भाग्य-चक्र मे
पडा, आपदाओ से ऊबा कि मै ज़िदगी
किसी दॉव पर लगा सकूँगा, फिर जीतूँ या
सब कुछ हारूँ।

मैकबेथ : तुम दोनो बैंकों को अपना
दुश्मन जानो।

दूसरा हत्यारा : मालिक जो कहते है सच है।

मैकबेथ : वैसा ही वह मेरा भी है, और दुश्मनी
उसकी इतनी तीखी, उसका एक-एक पल
जीना मेरे मर्मस्थल को साल रहा है :
गो मैं खुलेआम, ताकत से, उसे नजर से
टर हटा सकता हूँ जब मेरी मर्जी हो,

तो भी मुझको ऐसा करना नही चाहिए,
कारण हैं कुछ मित्र जो कि प्रिय हम दोनो के,
और मुरौवत जिनकी तोड नही सकता हूँ,
चाहे मैं खुद उसे गिराऊँ, उसके गिरने
पर मैं आँसू ढलकाऊँगा　इसीलिए तो
मुझे तुम्हारी मदद चाहिए, भारी कारण
हैं जिनसे यह काम आम जनता की आँख
बचाकर करता ।

दूसरा हत्यारा :　　आप हमे जो आज्ञा देंगे
हम पालेंगे ।

पहला हत्यारा　　चाहे इसमे प्राण हमारे

मैकबेथ　: तेज तुम्हारी आँखो मे है । अधिक से अधिक
घटे भर मे मैं तुमको समझा देता हूँ
कहाँ घात मे बैठा जाए, और सूचना
भी देता हूँ ठीक समय की, सच्चे पल की,
क्योकि आज ही रात काम यह हो जाना है,
और महल से कुछ दूरी पर, ध्यान रहे यह,
मेरे ऊपर दाग न आए, औ' उसके ही
साथ, कि जिसमे कोई खोच-खुरच मत छूटे,
इसी अँधेरे मे उसके इकलौते बेटे
का भी तुम्हे सफाया करना है जो उसके
साथ रहेगा, उसका मेरे पथ से हटना
उतना ही मेरे मतलब का जितना उसके
दुष्ट पिता का । जाकर अलग इरादा अपना

पक्का कर लो, मै जल्दी ही तुम्हे मिलूंगा।

त्यारा : मालिक, हम पक्का कर चुके इरादा अपना।

: सीधे तुम्हे बुला लूंगा मै : अदर वैठो।—

[हत्यारे जाते है

वैको तेरी रूह स्वर्ग यदि जा पाएगी
तो निश्चय है, आज रात को ही जाएगी।

[वाहर जाता है

दूसरा दृश्य

वही। दूसरा कमरा

(सेवक के साथ लेडी मैकवेथ आती है।)

लेडी मैकवेथ : क्या वैको दरवार से गए ?

सेवक देवि, गए, पर
आज रात ही लौट रहे हैं।

लेडी मैकवेथ . जाओ और कहो राजा से मैं उनसे कुछ
कहने को उनकी सुविधा की राह देखती।

सेवक : देवि, कहूँगा।

[सेवक वाहर जाता है

लेडी मैकवेथ : कुछ न मिलता, सव कुछ खोता,
जहाँ कामना पूरी होती, हर्ष न होता :
हत्या करके भी जव हम सुख-चैन न पाएँ,
तो इस जीने से वेहतर है खुद मर जाएँ।

(मैकवेथ आता है।)

कहिए, श्रीमन्, आप अकेले क्यों रहते है,
घिरे खयालो से जिनमे है भरी उदासी,

दवे विचारो से जिनको तो साथ उन्ही के,
जिनकी याद जगाते हैं वे, सो जाना था ?
चिंता उसकी व्यर्थ मर्ज़ जो ला-इलाज है
किया, सो किया ।

मकवेथ हमने ज़ख्मी किया साँप को
किंतु न मारा . घाव भरा तो फिर निकलेगा,
उसके साथ अदावत मे नर्मी दिखलाना,
विष दतो को दावत देना । छिन्न-भिन्न हो,
लेकिन, जग का जाल, नष्ट परलोक-लोक हो
इसके पूर्व कि हम डर-डरकर कौर उठाएँ
या उन भीषण स्वप्नो से आतकित सोएं,
जो हमको रातो को कपित करते रहते ।
खिचा शिकजे मे दिमाग ले, विक्षिप्तो की
तरह तडपने से बेहतर है हम उन मुर्दो
के सगी हो जिनको अपनी शाति के लिए
हमने शात कर दिया । डकन पडा कब्र में,
जीवन-ज्वर से मुक्त चैन से वह सोता है,
गद्दारी जो कर सकती थी सब कर गुजरी
अस्त्र-शस्त्र, विप, गृह-विद्वेप, विदेशी हमला—
इनमें से कुछ नही उसे अब छू सकता है ।

लेडी मैकवेथ आएँ, श्रीमन् अपने चेहरे की सख्ती पर
नर्मी लाएँ, आज रात को मेहमानो के
बीच आपके मुंह पर रौनक और खुशी हो ।

मैकवेथ . प्रिये, रहेगी, औ' तुम भी ऐसी ही दिखना ।

ख्याल रहे वैंको का : उसको ख़ासा आदर
देना आँखो से, बातों से : जब तक हमको
अपने पद को चाटुकारिता के जामे से
ढकना पडता और लगाना पड़ता चेहरा
मन का रूप छिपा रखने को, तब तक समझो
हम ख़तरे मे।

लेडी मैकबेथ : ऐसी बातें आप न सोचे।

मैकबेथ : क्या बतलाऊँ !
प्रिये, बिच्छुओ से मेरा मस्तिष्क भरा है !
वैंको औ' फिलएस का जीना काल हमे है।

लेडी मैकबेथ : उन्हे काल ने दिया अमरता का पट्टा कब ?

मैकबेथ : यही तसल्ली है कि वार उनपर चल सकता।
अब प्रसन्न हो। इसके पूर्व कि चमगादड़ पर
खोल मठो से बाहर निकले, इसके पूर्व कि
हाँक मसानी देवी का सुन घूर-कूर पर
जन्मे झींगुर झीनी झनकारो से रजनी
की तंद्रिल घंटियाँ बजाएँ, एक भयंकर
काम किया जाएगा।

लेडी मैकबेथ : उसका नाम सुनूं तो ?

मैकबेथ : प्यारी चूज़ो, अभी न पूछो, काम सराहोगी
होने पर। आ तमसावृत रात, करुण दिन
के मृदु नयनो पर पट्टी लपेट दे औ' तू
अपने खूनी अलख हाथ से उस महान पट्टे
को कर दे रद्द फाड़कर टुकड़े-टुकड़े,

जिसके भय से मैं पीला हूँ !—अधकार बढता
आता है, औ' कौओ का झुड वनो की
ओर जा रहा,
भली वस्तुएँ दिन की नमित, निंदासी होती,
जबकि निशा के काले कारिंदे चौकन्ने
हो शिकार पर झपट रहे है। मेरे शब्दो
पर अचरज है, पर अपने को रक्खो निश्चल,
आदि बुरा जो उसे बुराई से मिलता बल।
आओ, मेरे साथ चलो अब।

[दोनो वाहर जाते हैं

तीसरा दृश्य

वही। उपवन बीच मे एक रास्ता जो
महल को जाता है।

(तीन हत्यारे आते हैं।)

पहला हत्यारा किसने तुझसे कहा साथ लगने को ?

तीसरा हत्यारा मैकवेथ।

दूसरा हत्यारा अविश्वास हम करें न इसपर, हमको छिपना
जहाँ और जो कुछ करना है, ठीक-ठीक यह
वतलाता है .

पहला हत्यारा तो तू भी आ, साथ खडा हो।
पच्छिम मे अव भी दिन की कुछ किरणें अटकी .
पिछडा पथी एड लगा तेजी से वढता
जिससे दिन रहते सराय पर वह आ पहुँचे,

जिसकी ताक लगाए है हम, पास पहुँचने
ही वाला है।

(नेपथ्य से घोडो की टापो की आवाज़ आती है।)

तीसरा हत्यारा · घोडों की टापे सुन पड़ती।

बैंको : (नेपथ्य से)
ज़रा रोशनी तो दिखलाओ।

दूसरा हत्यारा ठीक वही है :
बाकी जो आनेवाले थे सब हाते मे
पहुँच गए है।

पहला हत्यारा · उसके घोडे तो जाते है
चक्कर देकर—

तीसरा हत्यारा . एक मील का, पर वह प्रायः
सब लोगों की तरह, 'यहाँ से सिंहद्वार तक
पैदल जाता।

(आगे-आगे मशाल हाथ मे लिए पिलएस
आता है, पीछे-पीछे बैंको।)

दूसरा हत्यारा . दिखी रोशनी, दिखी।

तीसरा हत्यारा : वही है।

पहला हत्यारा : चुस्त रहो अब।

बैंको : आज रात को वर्षा होगी।

पहला हत्यारा होने भी दो।

(बैंको पर तीनो वार करते हैं।)

बैंको : हाय, दगा ! बेटे पिलएस भग, जी लेकर भग !

शायद तू मेरा बदला ले—अरे नराधम !

(बैंको मर जाता है, फ्लिएस भाग जाता है।)

तीसरा हत्यारा किसने यह रोशनी बुझा दी ?

पहला हत्यारा ठीक यही था।

तीसरा हत्यारा एक मरा बस पुत्र भग गया।

दूसरा हत्यारा महा ज़रूरी

भाग काम का बिगड गया तब।

पहला हत्यारा तो भी चलें बताएँ जितना काम बना है।

[सब जाते हैं

चौथा दृश्य

महल का बडा कमरा

(खाने की मेज लगी है। एक ओर से मैकबेथ और
दूसरी ओर से रास, लेनाक्स, सरदार लोग
और नौकर-चाकर आते हैं)

सरदार लोग : महाराज की जय हो !

मैकबेथ अपनी-अपनी श्रेणी सभी जानते, बैठें .
आगे-पीछेवालो, सबको, दिल से स्वागत !

सरदार लोग : महाराज को धन्यवाद है।

मैकबेथ मेजबान की तरह आज हम मेहमानो में
घूम-घूमकर सबसे सादर मिलें-जुलेंगे।
रानी राजसिंहासन पर बैठी हैं, लेकिन
उचित समय पर उनके द्वारा सबका स्वागत
किया जायगा।

लेडी मैकवेथ . (नेपथ्य से) श्रीमन्, मेरी ओर से कहे,
सभी हमारे मित्रो का दिल से स्वागत है।

(कहते-कहते लेडी मैकवेथ आती है और खाने की मेज पर वैठ जाती है।)

(पहला हत्यारा दरवाजे से झाँकता दिखाई देता है।)

मैकवेथ : (लेडी मैकवेथ से)
देख, हृदय से धन्यवाद सव तुझको देते।
एक वरावर दोनो पाँते, वहाँ वीच मे
मै वैठूँगा। खुलकर खूव हँसो-वोलो सव;
अव शराव का दौर चलेगा।—(हत्यारे से)
तेरे मुँह पर
खून लगा है।

हत्यारा . तो इसको वैको का समझें।

मैकवेथ : उसके अदर होने से वेहतर यह तुझपर।
काम तमाम हो चुका उसका ?

हत्यारा . मालिक, उसका गला कट चुका; मैने काटा।

मैकवेथ : तू सबसे अच्छा गरकट है; तुझसे वढ़कर
वह फिलएस की गति भी जिसने ऐसी की हो :
यदि तूने की, अद्वितीय तू।

हत्यारा : हे राजेश्वर,
वह फ्लिएंस तो वचकर भागा।

मैकवेथ : तव फिर मै आशंकित होता : वर्ना होता
पूर्ण सुरक्षित; ठोस, जिस तरह सँगमरमर हो;
अडिग, जिस तरह चट्टानें है, मुक्त, निरंकुश,

सब पर छाई हुई हवा-सा, लेकिन मैं हूं
अब सीमित, सकुचित, सपुटित, बद्ध विनाशक
भय, सशय से। —पर बैंको तो पार हो गया ?

हत्यारा : मेरे मालिक, वह नाले मे मरा पडा है,
उसके सिर के ऊपर गहरे बीस घाव हैं,
एक प्राण लेने को काफी।

(इस बीच मदिरा के प्याले भरे जाते है, और मैकवेथ
और लेडी मैकवेथ के स्वास्थ्य के लिये सरदार
लोग उन्हें ऊपर उठाते है।)

मैकवेथ (मेहमानो से) धन्यवाद है।—
(अपने आप)
वडा साँप मर गया सँपोला भाग गया जो
रखता जीवन-शक्ति कि जिससे विष उगलेगा,
अभी नही हैं दांत। —(हत्यारे से)
भाग जा, हम इसपर कल
वात करेंगे।

[हत्यारा चला जाता है

लेडी मैकवेथ : राजन्, आप नही करते हैं
खातिरदारी उदासीन मेहमानो के प्रति
होना, दावत को सराय का खाना करना,
आव-भगत से यह दी जाती। यह न हुई तो
घर खाना ही ज्यादा अच्छा, तश्तरियो मे
स्वाद तकल्लुफ मे आता है। जहां नही यह
बैठकें फीकी लगती।

मैकबेथ : मेरी गलती,
अब दुरुस्त हाजमा भूख की करे खुशामद,
और सेहत, हाज़मा-भूख की।

लेनाक्स : राजमान्य भी
अपना आसन ग्रहण करे अब।

(बैंको का प्रेत आता है और मैकबेथ की
जगह पर बैठ जाता है।)

मैकबेथ : गौरवपुज हमारे बैंको भी यदि यहाँ
उपस्थित होते, तो स्वदेश के सब नरपुगव
आज हमारे घर पर होते; मै चाहूँगा
अनुपस्थिति का कारण उनकी हृदय-हीनता
ही साबित हो, और न कोई दु.खद घटना !

रास : अनुपस्थिति से, श्रीमन्, अपनी बात न रखने
के वे दोषी। राजन्, करिए कृपा, आपके
साथ बैठने का गुरु गौरव हमे प्राप्त हो।

मैकबेथ : जगह कहाँ है ?

लेनाक्स : यहाँ आपकी जगह सुरक्षित।

मैकबेथ : कहाँ ?

लेनाक्स : यहाँपर, मेरे मालिक। है क्या जिससे
महाराज यो चौक रहे है ?

मैकबेथ : यह किसकी कारिस्तानी है ?

सरदार लोग : क्या राजेश्वर ?

मैकबेथ : तू कह सकता नही कि मेरी कारिस्तानी.
अपने रक्त-रँगे वालो को हिला न मुझपर।

रास . उठो, सज्जनो, महाराज का जी खराब है।

लेडी मैकबेथ . योग्य बघुओ, बैठो। राजा अक्सर ऐसे
हो जाते है, ऐसा हाल जवानी से है
कृपया बैठें, जरा देर का यह दौरा है,
ख्याल बदलते ही फिर अच्छे हो जाएँगे।
और चिढेंगे अगर आप इनको घूरेंगे,
और तबीयत बिगड जायगी, खाना खाएँ,
इनकी ओर ध्यान ही मत दें।

(मैकबेथ से)—

आप मर्द हैं ?

मैकबेथ बेशक, और बहादुर जिसमे इतनी हिम्मत
उसे देखता जिसे देख शैतान डरेगा।

लेडी मैकबेथ लौह-पुरुष हे ! यह केवल तस्वीर आपके
डर की सिर्फ कटार हवा की जो कि आपने
कहा, आपको डकन तक पहुँचा आई थी।
झूठे डर से ऐसे बकना और चौकना
उन कहानियो मे फबता है जो नानी से
सीख औरते जाडे की ठडी रातो मे
आग तापती कहती-सुनती। क्या बेशर्मी !
आप इस तरह अपना चेहरा क्यो विगाडते ?
सब कुछ करके आप सिर्फ खाली कुरसी को
घूर रहे है।

मैकबेथ ज़रा उधर को आँखें फेरो ! नजर घुमाओ !
दृष्टि गडाओ ! देखो ! कैसे तुम कहती हो ?

क्यों, किसकी परवाह मुझे है ? शीश हिला सकता
है तू तो जीभ भी हिला—हम जिनको दफना
आते है, अगर हमारे मुर्दाखानों
से, कब्रो से वापस आएँ, तो अच्छा है
हम अपने शव चीलो-कौओ को खिलवा दे।

[वैंको का प्रेत गायब हो जाता है

लेडी मैकबेथ : जड़ता मे क्या बिल्कुल ही कापुरुष हो गए ?

मैकबेथ : अगर यहाँ मैं खड़ा, उसे मैंने देखा था।

लेडी मैकबेथ : छि: बेशर्मी !

मैकबेथ : भूत काल मे जबकि मानवी
न्याय-शील से जन-समाज यह शात-सुरक्षित
नही बना था, खूनखराबा बहुत हुआ था;
और बाद को भी हत्याएँ बहुत हुई हैं,
छाती को थर्रानेवाली : एक समय था,
भेजा निकला इधर, उधर इसान मर गया,
और मामला खत्म वहीपर, लेकिन अब तो
सिर पर अपने बीस घाव ले फिर उठता है,
और हमारी कुरसी से हमको ढकेलता।
हत्या पर कम, इस हरकत पर ज्यादा अचरज।

लेडी मैकबेथ . लायक नायक, सारे प्यारे मित्र आपके
इतज़ार कर रहे आपका।

मैकबेथ : भूल गया था।—
मेरे सच्चे, सज्जन मित्रो, मेरे बारे
मे मत सोचो, मुझे एक अद्भुत बीमारी,

मुझे जाननेवालो को कुछ बात नही यह ।
चलो, मुहब्बत-सेहत सबो को, बैठूंगा मैं,—
मदिरा देना, पूरा भर दो —मैं पीता हूँ
सब लोगो की खुशी के लिए, औ' अपने प्रिय
साथी बैको की खातिर जिनकी अनुपस्थिति
हमें अखरती, काश यहांपर वे भी होते !
सबकी खातिर, उनकी खातिर हम पीते हैं,
और पिएँ सब सबकी खातिर।

सरदार लोग सारी सेवा
भक्ति हमारी महाराज को ।

(बैको का प्रेत फिर आता है ।)

मैकवेथ : भाग ! आँख से दूर चला जा ! गड मिट्टी मे !
ठडा तेरा खून, हड्डियाँ मज्जाहत हैं,
तेरी इन आँखो में, जिनसे तू लिलोरता,
कोई जोत नही वाकी है ।

लेडी मैकवेथ . इस हरकत को,
हे सरदारो, सिर्फ हस्बमामूल समझिए,
और दूसरी बात नही है, बस, अवसर की
हँसी-खुशी में विघ्न पड गया ।

मैकवेथ : मै कर सकता
जो कि मर्द कोई कर सकता
आगे आ तू वीहड रूसी रीछ की तरह,
वख्तरधर गैंडे, अफ्रीकी चीते ऐसा,
इसे छोडकर किसी रूप मे, पर मेरी इस्पाती

मनोशिराएँ कंपित कभी न होंगी :
या तू फिर से जीवित हो जा, और खुले मे
खड्ग हाथ मे लेकर मेरा मुकावला कर :
डरकर पीछे अगर हटूँ तो तू कह, वेशक,
मुझे किसी वच्ची का गुड्डा। भाग, भयकर
भुतने ! झूठी नकल, दूर हट !—

[वैंको का प्रेत गायव हो जाता है

यह कैसा है !—
उसके जाते ही मै फिर से पहले जैसा।—
(सरदार लोग उठने लगते हैं।)
आप कृपाकर वैठे रहिए, वैठे रहिए।

लेडी मैकवेथ: खूव रग में भग आपने किया, उखाड़ो
वढ़िया वैठक, वलिहारी इस पागलपन की।

मैकवेथ . क्या ऐसी चीज़े हो सकती औ' गरमी के
वादल-सी हमपर घिर सकती विना हमे अचरज
मे डाले ? तुम मेरे मिजाज के प्रति भी
मुझे अजनवी सावित करती, जवकि देखता
ऐसे दृश्यो के आगे भी तुम गालो की
स्वाभाविक लाली रख सकती, जव मेरा मुख
डर से पीला पड़ जाता है।

रास : दृश्य कहाँ का,
मेरे मालिक ?

लेडी मैकवेथ : कृपा करे, इनसे मत वोले,
और खराव तवीयत इससे हो जाएगी

कुछ पूछेंगे तो बिगड़ेंगे। नमस्कार है
सब लोगो को —श्रेणी-शिष्टाचार छोड़ सब
साथ विदा हो।

लेनाक्स . नमस्कार है, महामहिम की
सेहत ठीक हो।

लेडी मैकबेथ . सब लोगो को नमस्कार है।

[सरदार लोग और सेवक बाहर जाते हैं

मैकवेथ . कहा गया है, हत्या का बदला हत्या है,
खून, खून का पत्थर हिलकर, पेड बोलकर,
और कार्य-कारण सबंध समझनेवाले
चतुर नजूमी नीलकठ, कौओ, चिडियो से
छिपे से छिपे हत्यारे का भेद खोलते।—
रात जा चुकी होगी कितनी ?

लेडी मैकबेथ गई समझिए,
गो यह कहना कठिन सवेरा हो आया है।

मैकवेथ . मैकडफ कहता है मेरी आज्ञा पर हाजिर
होने से इन्कार उसे है, क्या कहती हो ?

लेडी मैकवेथ श्रीमन्, उसे आपने क्या बुलवा भेजा था ?

मैकवेथ ऐसा सुनता हूँ, पर मैं बुलवा भेजूँगा।
कोई ऐसा नही कि जिसके घर के अंदर
मैं जासूस नही रखता हूँ। कल जाऊँगा,
औ' तड़के ही, भूत-भगिनियो से मिलने को :
वे कुछ और बताएँगी, अब घृणित से घृणित
विधि से जो कुछ बुरी से बुरी होने को है,

उसे जानने को मै पूरी तरह तुला हूँ ।
मेरा, अगर, भला होता है तो औरो को,
भले, भलाई जाय भाड मे : रक्त-धार मे
इतने गहरे पैठ चुका हूँ, जो ठहरूँ तो
पीछे हटना आगे वढने-सा ही दुष्कर ।
जो विचित्र वाते मेरे दिमाग के अदर
चक्कर करती, वे हाथो मे ली जाएँगी,
समझी जाने के पहले ही की जाएँगी ।

लेडी मैकबेथ . सव रोगो की दवा, आपको नीद चाहिए ।

मैकबेथ : चलो सो रहे । मेरा अद्भुत दोष यही है,
मै नौसिखिए-सा डरता जो मँजा नही है ।
अव भी हम इन कामो मे बिल्कुल कच्चे हैं ।
[दोनो जाते है

पाँचवाँ दृश्य

मैदान

(वादल गरजता है । एक ओर से तीनो डाइनें और दूसरी ओर से मसानी देवी आकर मिलती है ।)

पहली डाइन : कहो मसानी देवी, हमसे रूठी क्यो हो ?

मसानी देवी · सुनो, ढीठ, मुँहजोर डुकरियो, जो तुम हो भी,
मै जो तुमसे रूठ गई हूँ, उसका कारण :—
कैसे करने की जुर्रत की
तुमने मैकवेथ से व्यापार
अपनी दो-अर्थी वातों से,

जो ली उसने हाथ कटार ?
और तुम्हारे सब मंत्रो की
मलकिन जो मैं एक प्रधान,
जिसके हथकडो से होता
सारी दुनिया का नुकसान,
उसे न तुमने कभी बुलाया,
उसका भी हो इसमे भाग,
वह भी अपना हुनर दिखाए,
और सुनाए अपना राग।
बात बुरी यह सबसे, तुमने
किया-धरा इतना उत्पात
जिसके कारण, वह ऐसा नर
नही किसीकी सुनता बात।
वह द्रोही है, वह कोही है,
जसी सारे जग की रीति,
अपना उल्लू सीधा करने
को करता है तुमसे प्रीति।
अभी वक्त है, चलो गुफा मे,
जो है वैतरनी के तीर,
वही पूछने को पहुँचेगा
प्रात वह अपनी तकदीर।
करो इकट्ठे अपने वर्तन,
जतर-मतर सारे साज,
आज रात मुझको करना है

एक भयकर मारू काज ।
मैं उडती हूँ, मध्य दिवस के
पहले करना भारी काम,
चद्र-कोर पर लटक रहा है
एक ओस का कण अभिराम ।
धरती पर गिरने से पहले
मै उस कण को लूँगी लोक,
औ' जादू से छान भरूँगी
उसके अदर शक्ति अमोघ,
जिससे नकली प्रेत उठेंगे,
जिनकी माया के बलवान
फदे मे फँसकर भोगेगा
वह जीवन के कष्ट महान ।
अवहेला करके किस्मत की
और मौत का कर उपहास,
बुद्धि, शील, भय सबके ऊपर
पहुँचा देगा अपनी आस
है मालूम तुम्हे, बेफिक्री
है मनुष्य की दुश्मन खास ।

(नेपथ्य में गाना होता है . 'आओ मसानी आओ', आदि ।)

सुनो । बुलावा आया मुझको :
मेरा नन्हा प्रेत विभोर
कुहरे के बादल मे बैठा

लपट, वधक उठ, उबल, कडाह !

दूसरी डाइन छिला-कटा दलदलिया साँप
सिझे कडाही में, दे भाप,
मेढक के पिछले पंजे औ'
गिदगिदान की आँखे लाल,
जीभ किसी पागल कुत्ते की
चमगादड के पर का बाल,
विषधर की काँटे-सी जिह्वा
औ' अंधे बिच्छू का डंक,
लंगडी विस्तुइया की टाँगें,
उल्लू के पट्ठे का पंख —
सब मिलकर यम की खिचडी-सा
खूब पके, उबले, उछले,
जादू से दुख-दाह खडा हो
जिससे सब दुनिया दहले।

सब डाइनें दुगुना-दुगुना हो दुख-दाह
लपट, वधक उठ, उबल, कडाह !

तीसरी डाइन कडी अजदहे की चमडी औ'
तेज भेडिए के दस दाँत,
लोथ लटी बुढिया डाइन की,
मगरमच्छ की फूली आँत,
मूल धतूरे का ऐसा जो
खोद निकाला आधी रात,
जिगर यहूदी का बकवासी,

गुर्दे बकरे के छः-सात,
छाल सरो की छील उतारी
जब हो चाँद गहन की ओट,
नाक तुरुक की लंबी-पतली,
तातारी का मोटा होठ,
उँगली उस बच्चे की जिसको
जननेवाली जबर छिनाल
पैदा होते ही उसका दम
घोट गई नाली में डाल . —
सब कड़ाह के अदर छोड़ो,
औ' चीने का अतड भी,
गाढी औ' लबदार कढी का
पूरा हो सामान सभी ।

सभी डाइनें दुगुना-दुगुना हो दुख-दाह :
लपट, धधक उठ, उबल, कडाह

दूसरी डाइन : अब छिडको बदर का खून :
जादू हो पक्का, परिपूर्ण ।

(मसानी देवी आती हैं ।)

मसानी देवी : खूब किया मेहनत से काम,
फल मे सबका होगा नाम ।
अब कड़ाह के चारो ओर
नाचो परियो-सी मदभोर,
और बढे जादू का जोर ।

(नेपथ्य मे गाने-बजाने की आवाज़)

दूसरी डाइन लगी अँगूठे बीच खराश,
आता है कोई बदमाश ।—
(नेपथ्य में दरवाजा पीटने की आवाज)
हुई पुकार,
खोलो द्वार ।
(मैकबेथ आता है ।)

मैकबेथ गुपचुप, आधी रात, अँधेरे मे, डोकरियो,
क्या करती हो ?

सब डाइनें : जिसका कोई नाम नही है ।

मैकबेथ . मै कहता हूँ, कसम तुम्हे अपनी विद्या की,
किसी तरह से भी तुम जानो, मुझे बताओ
भले बवडर तुम्हे उठाने पडे, लडे वे
गिरजाघर की मीनारो से, भले फेन से
भरी तरगें जलपोतो को डाल भँवर के
बीच डुबा दे, भले खडी फसलें चौपट हो,
वृक्ष टूटकर गिरे, भले ही पहरेदारो
के सिर पर गढ भहराएँ, प्रासाद-पिरामिड
अपनी बुनियादें छूने को शीश झुकाएँ,
बीज-कोष कुदरत का मारा नष्ट-भ्रष्ट हो,
औ' चाहे विध्वस अघाए, ऊबे तो भी,
जो मै तुम मे पूछ रहा हूँ मुझे बताओ ।

पहली डाइन बोलो ।

दूसरी डाइन पूछो ।

तीसरी डाइन · हम प्रश्नो का उत्तर देगी ।

पहली डाइन : कहो, सुनोगे हमसे उत्तर, या कि हमारे
गुरुओं के मुख ?

मैकबेथ . उन्हे बुलाओ, देखूँ तो मै।

पहली डाइन नौ बच्चो को खानेवाली
सुअरी का अब खून उँडेल,
छोड़ लपट के अदर फाँसी
के फंदे से निकला तेल।

सब डाइने ऊपर के नीचे को चाहे
नीचे के ऊपर आओ,
अपने को, अपने करतब को
चतुराई से दिखलाओ।

(बिजली की कड़क। पहली छाया, टोप-सज्जित सिर।)

मैकबेथ : ओ रहस्यमय शक्ति बता—

पहली डाइन : जो तेरे मन मे
ज्ञात उसे है : सुन चुप, कह देगा वह क्षण मे।

पहली छाया . मैकबेथ! मैकबेथ! मैकबेथ! मैकडफ़ से सचेत रह,
फाइफपति से रह सचेत! बस, जाने को कह।

[पहली छाया नीचे चली जाती है

मैकबेथ : जो भी तू हो, इस आगाही का कृतज्ञ हूँ
तूने मेरे डर पर उँगली रख दी।—लेकिन

पहली डाइन : वह न रुकेगा। देख दूसरा अब आता है
जो पहले से अधिक बली है।

(बिजली की कड़क : दूसरी छाया, खून सना बच्चा।)

दूसरी छाया . मैकबेथ! मैकबेथ! मैकबेथ!—

मैकबेथ तीन कान होते तो सुनता मै तीनो से।

दूसरी छाया खूनी, धाकड और धुनी बन, मानव बल पर
अट्टहास कर, क्योकि नारि से जन्मा जो नर
मैकबेथ का कुछ कर न सकेगा।

[दूसरी छाया नीचे चली जाती है

मैकबेथ तब जी, मैकडफ मुझे किसलिए तुझसे डर हो ?
पर निश्चित को परम सुनिश्चित कर लूंगा मै,
और प्रतिज्ञा-पत्र लिखा लूंगा किस्मत से :
तू न बचेगा जीता, जिससे कच्चे दिल के
डर से मैं कह सकूं कि तू झूठी कहता है।
सिर पर बिजली कडक रही हो तो भी सोऊॅ।

(बिजली की कडक। तीसरी छाया, हाथ में पेड की
शाखा लिए, मुकुट-सज्जित बच्चा।)

यह क्या है, जो राजपुत्र की भांति उठ रहा
है, जो अपने बाल भाल पर गोला, ऊँचा
ताज राज-प्रभुता का पहने ?

सब डाइने सुन, चुप रहकर।

तीसरी छाया सिंह सदृश दभी बन सब चिंताएँ तजकर—
कौन झगडता, कौन बिगडता, और कहांपर
षडयत्री है : अजय रहेगा मैकबेथ तबतक
डसीनेन पहाटी तक बरनम बन जबतक
नही चला आता है।

[तीसरी छाया नीचे चली जाती है

मैकबेथ ऐसा कभी न होगा

बन को कौन उभार सकेगा , ऐसा पोगा
कहाँ, कहे जो तरु से अपनी धराबद्ध जड़
से हट जाए ? यह भविष्यवाणी शुभ-सुदर !
सिर न उठे, वागियो, जब तलक बरनम बैठा,
उच्चासीन रहेगा मैकबेथ मूँछें ऐंठा .
अपना पूरा प्राकृत जीवन भोग करेगा,
साँसो का ऋण चुका, काल से उऋण मरेगा।—
हृदय मचलता, किंतु जानने को यह फिर भी :
बतलाओ, यदि कला तुम्हारी बतला सकती,
क्या यह राज्य कभी बैंको की सतानो के
वश मे होगा ?

सब डाइनें : और जानने का हठ मत कर।

मैकबेथ तुम्हे बताना होगा मुझसे : नही बताती
तो अनत अभिशाप तुम्हारे सिर पर टूटे।
मुझे बताओ।—अब कड़ाह क्यो डूब रहा है ?
(नेपथ्य मे डरावनी आवाजें होती है।)
औ' यह आवाजें कैसी हैं ?

पहली डाइन : दिखो।

दूसरी डाइन : दिखाओ !

तीसरी डाइन : दिखलाओ !

सब डाइनें : इसकी आँखों को दिखलाओ,
इसके दिल पर दुख ढाओ ;
परछाईं बनकर तुम आओ,

परछाई बनकर जाओ।

(आठ राजाओ की छाया, अंतिम के हाथ मे दर्पण, बाद को बैंको।)

मैकबेथ तू बैंको के प्रेत-नुमा है हट आगे से !
तेरे ताज, बाल से, मेरी आँखें जलती, —
और दूसरा शीश, मुकुटधर, तू, पहले-सा, —
और तीसरा है पिछले-सा —गदखानियो !
क्यो यह मुझको दिखलाती हो ?–चौथा भी है ?–
आँखे सिहरो ! वश प्रलय तक जाएगा क्या !
छठा ?–सातवाँ ?–और नही दिखलाई देगा –
किंतु आठवाँ भी है, जिसके कर मे दर्पण,
जिसमे और वहुत से दिखलाई पडते हैं,
कुछ के हाथो मे दो गोलक, तीन दड है।
दृश्य भयकर !–अब मुझको लगता यह सच है,
क्योकि खून से तर बैंको मुझपर मुसकाता,
उनको दिखलाकर कहता है वे उसके है।—
क्या ! ऐसा है ?

पहली डाइन. ऐसा ही सब है —पर मैकबेथ
खडा हुआ क्यो आँखे फाड ?
उसका मन बहलाने को हम
खोले खुशियो का भडार।
डाल हवा के ऊपर जादू
मैं कर दूँ सगीत प्रसार,
औ' तुम दोनो नाच दिखाओ

चतुराई से चक्कर मार,
जिससे यह भूपाल प्रतापी
करे ख़ुशी से यह स्वीकार,
बीच हमारे आकर इसने
पाया है स्वागत-सत्कार।

[सगीत . डाइनें गाती हुई गायब हो जाती है
(नेपथ्य मे घोडो की टापो की आवाज़)

मैकबेथ : कहाँ गई वे ? गायब ?—ये अशकुन की घड़ियाँ
पत्रे के ऊपर सदैव अभिशप्त रहेगी !—
बाहर वालो, अदर आओ !

(लेनाक्स आता है।)

लेनाक्स : महाराज की
क्या आज्ञा है ?

मैकबेथ : तुमने भूत-भगिनियाँ देखी ?

लेनाक्स : कही न, राजन् !

मैकबेथ नही निकट से होकर निकली ?

लेनाक्स : नही कही से भी, राजेश्वर !

मैकबेथ : हवा विषैली
हो जिसपर वे चढकर फिरती, जायँ जहन्नुम
मे जो उनका करे भरोसा !—मुझे सुनाई
दी थी घोड़ो की टापें · कोई आया था ?

लेनाक्स : आए थे दो-तीन व्यक्ति स्वामी से कहने
को, मैकडफ इंग्लैड भग गया।

मैकबेथ : तो मैकडफ

इंग्लैंड भग गया ?

लेनाक्स　　निश्चय, मेरे सच्चे स्वामी !

मैकबेथ　　काल, कुटिल मेरी मशाएँ जान पूर्व ही
तू उनमे बाधाएँ देता चटुल इरादा,
जबतक उसके साथ न करनी भी जाए, जुल
दे जाता है । इस पल से हर बात हृदय मे
आने के ही साथ हाथ मे ली जाएगी ।
और अभी, अपने ख्यालो को कामो का जामा
देने को, जो सोचा, कर डाला जाए
मैकडफ के गढ पर चढकर मै घेरा डालूँ,
फाइफ को कब्ज़े में कर लूं, औ' खाँडे की
धार उतारूँ उसकी बीबी, उसके बच्चे,
सभी अभागे उन लोगो को जो उसके कुल-
कुनबे के है । नही मूढ की भाँति डीगना,
ठडा होने के पहले यह लोह पीटना
छायाओ से काम नही अब ! कहाँ गए जो
समाचार लाए थे ? आओ चलो मिलाओ ।

[सब बाहर जाते हैं

दूसरा दृश्य

फाइफ । मैकडफ के गढ का कमरा

(लेडी मैकडफ अपने पुत्र और रास के साथ आती है ।)

लेडी मैकडफ　　किया उन्होने क्या था, भागे देश छोड जो ?

रास　　धीरज रक्खो, देवि !

लेडी मैकडफ़ : उन्होने ही कब रक्खा :
पागलपन था भाग निकलना : कर न हमे जब,
डर हमको गद्दार बनाता ।

रास : नही जानती
तुम यह उनका डर था या कि समझदारी थी ।

लेडी मैकडफ़ . बड़ी समझदारी थी ! अपनी बीबी छोडी,
बच्चे छोडे, कोठी, मालमता सब छोड़ा,
कहाँ ? जहाँ से भाग गए खुद । उनको हमसे
प्यार नही है : ऐसे है निर्मम-निर्मोही,
चिड़ियों मे जो सबसे छोटी, वह बेचारी
फुदकी अपने कच्चे-बच्चे लिये घोसले
में बिल्ली के साथ लडेगी । डर सब कुछ है
और प्यार कुछ चीज नही है, जबकि भागने
मे कोई तुक-तर्क नही था, ऐसा करना
कौन समझदारी थी ?

रास : मेरी प्यारी बहना,
शात-चित्त अपने को रक्खो : सच मानो पति-
देव तुम्हारे गौरव-ज्ञान-विवेकवान है,
और ज़माने की हलचल को खूब समझते ।
अधिक नही कहने का साहस कठिन समय है,
जब हम है गद्दार और खुद नही जानते,
जब हम डरकर अफ़वाहो को सत्य मानते,
पर क्यो डरते, नही जानते, बस उतराते,
झटके खाते कभी इधर से, कभी उधर से

क्रुद्ध और विक्षुब्ध सिंधु पर।—अब मै चलता
जल्दी ही मैं फिर आऊँगा। दो ही बातें
होनी हैं, या देश रसातल को जाएगा,
या ऊपर को उठ पहुँचेगा वहाँ जहाँपर
वह पहले था।—मेरी प्यारी बहन, सुखी हो।

लेडी मैकडफ (लडके की ओर सकेत करके)
पितावान होकरके भी यह पिताहीन है।

रास मेरा और यहाँ रुकना बेअकली होगी,
इससे मेरी हेठी होगी, तुमको दिक्कत
मुझे विदा दो।

[बाहर चला जाता है

लेडी मैकडफ (लडके से) रे, अब तेरे पिता मर गए
बोल करेगा क्या तू अब ? किस भाँति जिएगा ?

पुत्र मां, जैसे चिडियाँ जीती है।

लेडी मैकडफ कीडे चुन-चुन ?

पुत्र जो पाऊँगा, वे भी तो ऐसे ही रहती।

लेडी मैकडफ सुन, री चिडिया ! लासे, फदे और जाल मे
कभी न फँस तू, और न पड पिंजरे के अदर।

पुत्र कभी नही, मां। नन्ही चिड़िया कौन पकड़ता ?
बहुत कहो तुम, पिता हमारे नही मरे हैं।

लेडी मैकडफ सच कहती हूँ पिता तुझे अब कहाँ मिलेगा ?

पुत्र नही, तुम्हे पति कहा मिलेगा ?

लेडी मैकडफ चाहूँ तो मै बीस खडे बाज़ार खरीदूं।

पुत्र इतने अगर खरीदोगी तो फिर बेचोगी।

लेडी मैकडफ : तेज़ बोलनेवाला है तू;
छोटे बच्चे इतनी तेज़ी नही दिखाते ।

पुत्र . क्या गद्दार पिता थे मेरे ?

लेडी मैकडफ़ . हाँ, वे थे ही ।

पुत्र माँ, गद्दार कौन होता है ?

लेडी मैकडफ · जो झूठी कसमे खाता है, झूठ बोलता ।

पुत्र क्या वे सब गद्दार, इस तरह करते हैं जो ?

लेडी मैकडफ़ : हाँ, गद्दार हरेक, इस तरह करता है जो, और
उसे फासी पर लटका दिया जायगा ।

पुत्र : जो झूठी कसमे खाते है, झूठ बोलते, क्या सब-
को फाँसी पर लटका दिया जायगा ?

लेडी मैकडफ़ · एक-एक को ।

पुत्र कौन उन्हें फाँसी देगा, माँ ?

लेडी मैकडफ़ : जो सच्चे हैं ।

पुत्र · तब सब झूठ बोलनेवाले, झूठी कसमे खानेवाले
बेवक़ूफ है, वे इतने ज्यादा है, मिलकर, सब
सच्चो को मार भगा सकते हैं, फाँसी दे सकते हैं ।

लेडी मैकडफ़ · बंदर, तब तो ईश्वर तुझे बचाए, लेकिन
यह तो बतला पिता तुझे अब कहाँ मिलेगा ?

पुत्र · अगर मर गए होते वे तो उनपर तुम रोती-

अगर नही तुम रोती-धोती, तो अच्छे आसार,
कि जल्दी ही मैं नया पिता पाऊँगा ।

लेडी मैकडफ चतुर बोलके, तू कितनी बाते करता है !

(दूत आता है ।)

दूत देवि, आपका सदा भला हो ! मुझसे परिचित
आप नही हैं, किंतु आपके ऊँचे पद से
मै परिचित हूँ । मुझको डर है, कोई सकट
तुरत आप पर आनेवाला . अगर आप मेरी
मामूली-सी सलाह ले, यहाँ न ठहरें,
अपने बच्चे लेकर भागें । आप मुझे बर्बर
मत समझे, क्योकि आपको डरा रहा हूँ,
अधिक बताना उससे बढकर जुल्म आपपर
ढाना होगा, जोकि आपपर होने को है ।
ईश्वर करे आपकी रक्षा ! अब मै नही
ठहर सकता हूँ ।

[बाहर जाता है

लेडी मैकडफ़ कहाँ भागकर जा सकती हूँ ?
मैने किसका बुरा किया है ? किंतु भूलना
नही चाहिए, मैं इस मर्त्यो की दुनिया में,
जहाँ बुरा कर बहुधा लोग बडाई पाते,
अच्छा करके कभी बडी नादानी करते
तब क्यो, हाय, दलील जनानी आगे रखकर

में कहती हूँ, मैंने किसका बुरा किया है ?
कौन लोग ये ?

(हत्यारे आते हैं।)

हत्यारा : बोल, कहाँपर तेरा पति है ?

लेडी मैकडफ़ : जहाँ कही भी हो, वह ठौर अपावन ऐसा
नही कि तुझ-सा पतित वहाँ जा उन्हे मिल सके।

हत्यारा : तेरा पति गद्दारो मे है।

पुत्र : झूठ बोलता, झबरे कुत्ते।

हत्यारा : तू भी, पिल्ले !

(छुरा भोंकता है।)

नमकहरामी के बच्चे ! ले !

पुत्र : इसने मुझे मार डाला, माँ, जल्दी भागो,
मैं कहता हूँ ! (मर जाता है।)

['मार डाला' कहते हुए लेडी मैकडफ भागती है और हत्यारे उसका पीछा करते हैं

तीसरा दृश्य

इग्लैंड। राजमहल का एक कमरा

(मैलकम और मैकडफ आते हैं।)

मैलकम : चलो किसी एकात जगह पर तरु-छाया मे
बैठें, रोएँ औ' अपना दिल हल्का कर ले।

मैकडफ इससे अच्छा बहादुरों की तरह कमर मे

बधन काटें। प्रति दिन सुबह नई विधवाएँ
हा-हा करती, नए अनाथ सिसकते-रोते,
नए शोक से वदन व्योम का आहत होता,
औ' वह दर्द-भरी प्रतिध्वनि मे क्रदन करता,
जैसे वह भी स्काटलैड के साथ दुखी हो।

मैलकम जो मानूँगा, वह भीखूँगा, जो जानूँगा,
वह मानूँगा, जो सहायता दे सकता हूँ,
जब अवसर अनुकूल मिलेगा, निश्चय, दूँगा।
सभव है, तुमने जो बात कही, वह सच हो।
यह ज़ालिम जिसके कि नाम से मुख मे छाले
पड जाते हैं, कभी भला समझा जाता था
तुमने उससे प्रेम किया है, तुमपर उसने
नही अभी तक हाथ उठाया। मैं छोटा हूँ,
लेकिन मेरे द्वारा उससे कुछ पाने के
तुम अधिकारी हो सकते हो, अक्ल यही है,
क्रुद्ध देवता को खुश करने को तुम कोई
दुर्बल, दीन, अनाथ मेमना भेट चढा दो।

मैक्डफ धोखेबाज़ नही हूँ।

मैलकम लेकिन मैकवेथ तो है।
जो अच्छे, गुणवान, राजमद उन्हे कलकित
कर देता है। लेकिन मुझको क्षमा करो तुम
मैं कुछ भी सोचूँ, तुम जो हो, वही रहोगे।
स्वर्गदूत अब भी उज्ज्वल हैं गो उज्ज्वलतम
गिरे भले हो शोभा का मुख सब प्रकार के

कलुष घेर लें, वह शोभामय बना रहेगा।

मैकडफ़ : मेरी आशा लुप्त हो गई।

मैलकम : सभवतः उस
जगह जहाँ पर मेरी शका प्रकट हुई है।
क्यो पत्नी को, बच्चो को (धन-प्राण सगों को,
सुदृढ स्नेह की गाँठो के बधन को) तुम यों
छोड चले आए जल्दी मे, बिना बताए ?
यह मेरी प्रार्थना, कि मेरी शकाओं मे
अपनी मानहानि मत, मेरी रक्षा देखो :
मैं कुछ भी सोचूँ, संभव है, जो कुछ तुमने
किया, ठीक हो।

मैकडफ़ : भीग, भीग, लोहू से, ओ रे
देश अभागे ! बढ़, रे अत्याचार निरकुश,
सत्य नही साहस रखता, तेरा पथ रोके !
अन्यायो को सह, उनका आधार अटल अब !
मुझे विदा दो, मेरे स्वामी : अन्यायी के
लबे-चौड़े राज्य, पूर्व की विपुल संपदा
की खातिर भी मैं ग़द्दार नही बन सकता,
तुम कुछ समझो।

मैलकम : बुरा न मानो : मत समझो मैं
जो कहता हूँ वह इसलिए कि तुमसे मुझको
आशका है। मुझे ज्ञात है कठिन जुए से
आज हमारा देश दबा है, वह रोता है,
रक्त-नहाता; प्रतिदिन आकर नया घाव उस

पर कर जाता · पर आशा है मेरे हक मे
हाथ उठेगे, औ' उदार इग्लैड देश के
लोग, हजारो की संख्या मे, मदद करेंगे ·
पर जब ज़ालिम के सिर पर मै पग रख लूंगा,
या जब उसको काट उठा लूंगा भाले पर,
तब भी मेरे दीन देश के ऊपर दूषण
पहले से ज्यादा ही होगे, मुसीबतें भी
ज्यादा होगी, और बहुत ज्यादा किस्मो की,
उसके कारण, जो स्वदेश पर राज करेगा ।

मैकडफ · कौन करेगा ?

मैलकम . मेरा मतलब अपने से है,
मुझे ज्ञात है मेरे मन के अदर कैसे-
कैसे दुर्गुण छिपे हुए हैं, उनके ज़ाहिर
हो जाने पर काला मैकवेथ हिम-सा उजला
दीख पडेगा, औ' मेरे अगणित दोषो की
तुलना मे यह देश अभागा उसे मेमने-
सा समझेगा ।

मैकडफ : कुंभीपाक नरक के अनगिन
वाशिंदो मे ढूंढे से भी नही मिलेगा
ऐसा अधम पिशाच कि जो मैकवेथ से ज्यादा
कलुष-पुंज हो ।

मैलकम मान लिया वह खूनी, भोगी,
लोभी, झूठा, सबको धोखा देनेवाला,
औ' उतावला, वैसा हुआ प्रत्येक पाप मे

जिसका नाम लिया जा सकता; लेकिन मेरी
कामुकता की थाह नहीं है : उसके सागर
को भरने को सभी तुम्हारी वहू, वेटियों,
वहन, वीवियों, और बाँदियों का पत-पानी
दिया जाय तो भी वह खाली रह जाएगा;
मेरी मशा पर कितने ही मर्यादा के
बाँध बनाओ, मेरी प्रबल वासना सबको
बहा-ढहा देगी : ऐसे शासनकारी से
मैकबेथ अच्छा ।

मैकडफ़ : सीमाहीन असंयमता को
प्रकृति नहीं सह सकती, इस दुर्गुण के कारण
कितने सुख-सिंहासन असमय रिक्त हुए हैं,
राजाओं का पतन हुआ है। फिर भी जो अपना,
उसको लेने से न डरो . जो सुख-भोग
तुम किया चाहो, आज़ादी से कर सकते हो;
सिर्फ ज़माने की आँखें इस भाँति बचाकर,
सीधे-सादे समझे जाओ । प्रतिभा का रुख
इधर देखकर अपना तन अर्पण कर देने
वाली बालाओं की कोई कमी नहीं है;
ऐसा गिद्ध तुम्हारे तन मे नहीं बसा है
जो इतनों को भोज्य बनाए ।

मैलकम : किंतु साथ ही
मेरे विकट विलासी मन के अंदर उत्कट
लोभ बसा है : यदि मैं राजा बन जाता हूँ,

सरदारो का वधकर उनकी भूमि हरूँगा,
इसका माल खसोटूँगा, उसका घर लूँगा,
जितना पाऊँगा उससे उतनी ही मेरी
और-और की प्यास बढेगी, निष्कारण ही
भक्त-भलो के साथ झगडकर उनका सारा
धन हडपूँगा, नाश करूँगा।

मैकडफ . इस लालच की
जड, कामुकता के वासती झड-झोके से
ज्यादा गहरी, अधिक विघाती, यह वह खाँडा,
जिसकी धारो पर शाहो के शीश तिरे हैं
तो भी न डरो, स्काटलैंड के पास बहुत है,
वह तो सिर्फ तुम्हारा ही तुमको देकरके
खुश कर देगा। और तुम्हारे दोप, गुणो की
तुलना मे खप जाएँगे।

मैलकम लेकिन मुझमे तो
राजाओ को शोभा देनेवाला लक्षण
एक नही है, न्याय, सत्यता, सयम, दृढता,
दानवीरता, लगन, वीरता, दया, नम्रता,
साहस, निष्ठा, सहनशीलता—इनका मुझमे
लेश नही है, तरह-तरह के अपराधो के
तरह-तरह से प्रतिपादन में, अलवत्ता मैं
दक्ष। अगर मुझमे वल होता तो मिल्लत के
मधुर दूध को मै दोजख मे उलटा देता,
विश्व-शाति को क्राति वनाता, वसुधरा पर

सधी एकता खंडित करता।

मैकडफ़ : स्काटलैंड हे,
स्काटलैंड !

मैलकम : यदि ऐसा कोई शासन करने
का अधिकारी हो तो बोलो : बता दिया जो,
जैसा हूँ मैं।

मैकडफ़ : शासन करने का अधिकारी !
नही, नही जीवित रहने का। त्रस्त जाति हे,
एक अनधिकारी ज़ालिम के ख़ूनी भाले
से अनुशासित, कब फिर तू अब अपने सुख के
दिन देखेगी, क्योंकि राज के सिंहासन का
सच्चा मालिक अपने ही मुख से आरोपित
दोषों से अभिशापित अपना वंश कलंकति
करा रहा है ? तेरे गौरव-पुज पितृवर
नरपतियों मे परम संत थे : रानी, जिसकी
पुण्य कोख ने तुझको जन्मा, कदम-कदम पर
ईश्वर का सुमरन करती थी; धर्माचरण
नित्य करती थी, जैसे उसके केश मृत्यु ने
पकड लिए हो। तुझसे विदा ले रहा हूँ मैं !
जो दुर्गुण तू अपने अदर बतलाता है
स्काटलेंड से मुझे निकाला दिया उन्होने।—
ओ मेरी छाती, तू फट जा, तेरी आशा
टूट चुकी अब !

मैलकम : मैकडफ, तेरे दिल से निकले

इतने उज्ज्वल, इतने पावन उद्गारो ने
मेरे मन के सदेहो की सकल कालिमा
धो डाली है, औ' तेरी सच्चाई, तेरी
सज्जनता के प्रति मेरा विश्वास जगाया।
नरपिशाच मैकबेथ ने अपने षड्यत्रो से
मुझे पकडने को बहुतेरे यत्न किए है,
और समझदारी थोडी-सी मुझे सिखाती
अजनबियो के कहे-सुने मे जल्द न आऊँ
मेरे-तेरे बीच एक ईश्वर साखी हो !
क्योकि इसी क्षण से अपनेको तुझे सौपता,
और स्वय की निदाओ को वापस लेता,
अपने ऊपर मैंने कलुष-कलक लिये जो,
उन्हे त्यागता, वे मुझसे सर्वथा अपरिचित।
मैंने अबतक नारी का सहवास न जाना,
झूठी कसम नही खाई है, जो अपना ही
था उसके भी लिए नही लालच दिखलाई,
कभी नही अपना प्रण तोडा, दगा न दूँगा
दानव को भी, और मुझे जीवन से इतना
प्यार कि जितना सच्चाई से, मेरा पहला
झूठ यही था जो मै अपने ऊपर बोला।
जो मुझमे सच, वह तेरा है, दीन देश की
सेवा मे है तेरे आने के पहले से
बाँके, वीर, लडाके सैनिक दस हज़ार ले
वृद्ध सिवर्ड चढाई करने को उद्यत हैं।

अब हम सब मिल साथ चलेगे । और हमारे
न्याय-समर्थित सगर का फल मंगलमय हो !
तुम चुप क्यों हो ?

मैकडफ : इतनी अप्रिय औ' प्रिय बातों
की सगति बिठलाना मेरे लिए कठिन है।

(डाक्टर आता है।)

मैलकम : बाकी फिर।—क्या महाराज आनेवाले है ?

डाक्टर : निश्चय श्रीमन्, उनके हाथ शफा पाने को
दुखियारो का झुड खडा है : उनके रोगो
से हिकमत भी हार गई है, महाराज के
हाथो मे ईश्वर-प्रदत्त कुछ ऐसा जस है,
उनके छूने से वे अच्छे हो जाते हैं।

मैलकम : धन्यवाद है तुम्हे, डाक्टर।

मैकडफ : कौन रोग यह ?

मैलकम : इसको त्वचा रोग कहते हैं : जबसे आया,
महाराज का यह अद्भुत गुण कई बार मै
देख चुका हूँ। उनकी अर्ज़ स्वर्ग सुन लेता,
कैसे, इसको वे ही जाने; आते ऐसे
लोग कि जिनका रोग अजूबा, जिनके तन पर
फूलन-फोडा, जिन्हे देखने से दुख होता,
शल्य चिकित्सा से जिनको आराम न मिलता,
मगर मत्र कोई पढ एक सुनहरा सिक्का
वे गर्दन मे पहना देते, बस वह अच्छा
हो जाता है : और कहा जाता है ऐसा,

क्रमिक उत्तराधिकारियो मे भी यह सद्गुण
आ जाएगा। इस गुण के अतिरिक्त भविष्यद्-
वाणी की भी शक्ति उन्हे है, और बहुत से
यश-विस्तारक वरदानो से उनका सिहासन
शोभित है।

(रास आता है।)

मैकडफ : देखो कौन चला आता है।
मैलकम : देशनिवासी, लेकिन अभी नही पहचाना।
मैकडफ : आओ, बधु कृपालु, स्वागतम् तुम्हे यहाँपर।
मैलकम : अब पहचाना। दयावान प्रभु वे बाधाएँ
शीघ्र हटाएँ हमे जिन्होने अलग किया है।
रास : ऐसा ही हो।
मैकडफ : स्काटलैंड का हाल वही क्या
जो पहले था?
रास : दीन देश की बुरी दशा है।
अपनी ही हालत पर डरा हुआ लगता है।
मातृभूमि अब मृत्यु-भूमि है, और कही खुश
वही दिखाई देता जिसको कभी जगत-गति
नही व्यापती, वहाँ पुकारें, आहे, चीखे
गगन भेदती उठती, किंतु अनसुनी जाती,
वहाँ शोक मे पागल होना अब घर-घर की
बीमारी है, गिरजो में जब मृत्यु-घटियाँ
बजती, कोई नही पूछता, कौन मर गया,
सज्जन के जीवन उनकी कलँगो के फूलो

से पहले मुरझा जाते हैं, वे बीमारी
लगने से पहले मर जाते।

मैकडफ़ : क्या वर्णन है !
जितना अच्छा, उतना सच्चा।

मैलकम : बोलो क्या है
सबसे ताज़ी चोट देश पर ?

रास घंटे भर की
बात बतानेवाले के ऊपर हँसती है,
हर क्षण नई चोट पड़ती है।

मैकडफ़ : मेरी पत्नी
तो अच्छी है ?

रास : अच्छी ही है।

मैकडफ़ : मेरे सारे
बच्चे अच्छे ?

रास : वे भी अच्छे !

मैकडफ़ ज़ालिम ने क्या
उनकी शांति नही छीनी है ?

रास : नही, जब चला
मैं तब तो वे परम शांत थे।

मैकडफ़ : करो न शब्दों
की कजूसी, उनपर कैसी बीत रही है ?

रास : जब मैं चला यहाँको, खबरें पहुँचाने को,
जो मेरे दिल पर भारी हैं, अफवाहें थी,
लोग, बहुत से, बाग़ी बनकर निकल पड़े हैं;

औ' उनकी सच्चाई पर विश्वास हुआ कुछ,
कारण, उन्हे दबाने को जालिम की सेना
मैंने बाहर फिरती देखी । वक्त मदद का
आया है अब । स्काटलैंड मे चलो, तुम्हारी
नज़र सिपाही खडे करेगी, मुक्त कष्ट से
होने को औरते लडेंगी ।

मैलकम
वे प्रसन्न हो,
हम आते है । कृपाकुज इग्लैड ने हमे
दस हज़ार सैनिक औ' सेनापति सिवर्ड की
सेवाएँ दी हैं, उनसे बढ-चढकर जोधा
ईसाई देशो मे कोई और नही है ।

रास
ऐसे सुखद ममाचारो के प्रत्युत्तर मे,
काश, कि मै भी ऐसी कोई बात सुनाता !
लेकिन मेरे शब्दो को मरु की झझा के
बीच उगलना उचित, कि जिससे कोई उनको
सुने न समझे ।

मैकडफ
पूछूँ, किसके बारे मे वे ?
सार्वजनिक सकट के, या ऐसे सदमे के
किसी ख़ास के भाग्य पडा जो ?

रास
कोई भला
नही जो ऐसे दुख मे अपना भाग न समझे,
फिर भी उसका ज्यादा हिस्सा सिर्फ तुम्हारे
बाट पडा है ।

मैकडफ
यदि मेरा है, तो मुझसे कह

देने मे मत देर लगाओ; शीघ्र बताओ ।

रास : मेरी जिह्वा को न तुम्हारे कान सदा को
घृणित समझ ले : जैसा भीषण ध्वनि-विस्फोटन
यह करने को, कभी उन्होने सुना न होगा ।

मैकडफ़ · समझ गया मैं ।

रास : हमला हुआ तुम्हारे गढ़ पर;
बर्बरता से क़त्ल कर दिए गए तुम्हारे
बीवी-बच्चे : कैसे, बतलाने के मानी,
उनकी लाशो की ढेरी पर और तुम्हारी
लाश लादना ।

मैलकम : हे भगवान, दया कर हमपर !
कैसे मर्द, कि नीचे अपना शीश झुकाते :
दुख कह डालो, ग़म जो बाहर नही निकलता
भीतर-भीतर सिसका करता, दिल के ऊपर
बोझा बनकर उसे तोड़ डाला करता है ।

मैकडफ़ : मेरे बच्चे भी ?

रास : बीवी, बच्चे, नौकर सब
जो भी पडे सामने ।

मैकडफ़ : औ' मै दूर पड़ा था !
कत्ल हुई मेरी पत्नी भी ?

रास : बता चुका मैं ।

मैलकम . धीरज रक्खो : छाती के ये घाव भरेंगे
गहरे बदले के मरहम से; आओ मिलकर
उसे बनाएँ ।

मैकडफ : मै निर्वंश हो गया।—मेरे
प्यारे बच्चे सारे ? तुमने कहा कि सारे ?—
चील नारकी !—सारे ? क्या मेरे सारे ही
प्यारे चूज़े औ' उनकी माँ, निर्दय, तूने
एक झपट्टे मे ले डाली।

मैलकम . मर्द की तरह करो सामना।

मैकडफ : बंधु, करूँगा,
किंतु मर्द की छाती मे भी दिल होता है :
कैसे इसे भुला दूँ ऐसी चीज़ें थी जो
मेरे प्राणो की निधियाँ थी।—स्वर्ग देखता
रहा, उन्हे उसने न बचाया। पापी मैकडफ !
तेरे कारण कत्ल हुए वे। मैं नाकारा,
उनके अपने नही, किंतु मेरे दोषो से
छुरी फिरी उनकी गर्दन पर। प्रभु, अब अपनी
शरण उन्हें दो !

मैलकम . अश्रु-धार यह धार तुम्हारे
खाँड़े को दे . शोक, रोष मे परिवर्तित हो,
रंज न दिल को दावे, उसको उत्तेजन दे।

मैकडफ · मै आँसू नारी की भाँति बहा सकता था,
क्रंदन कर सकता था—पर भगवान् दयामय,
स्काटलैंड के इस अत्याचारी को, मुझको
निर्विलंब ला खडा करो आमने-सामने—
मेरी खड्ग परिधि के अंदर, अगर बचे तो
उसे स्वर्ग भी क्षमा-दान दे।

मैलकम : यह मर्दों की
बात कही है। महाराज से चलो मिले हम :
सेना सब तैयार खड़ी है : उनकी आज्ञा
की देरी है। मैकबेथ पका हुआ गिरने को,
हेतु बनाए स्वर्ग हमें—यह माँग, मस्त हो;
पूर्व दिशा को ही बढ़ता है सूर्य अस्त हो।

[सब जाते हैं

पाँचवाँ अंक

पहला दृश्य

डनसीनेन। किले का एक कमरा

(डाक्टर के साथ परिचारिका आती है।)

डाक्टर . तुम्हारे साथ जागते-ताकते दो रातें हो चुकी, पर जो तुम कहती हो उसमे कोई सच्चाई नही मालूम होती। पिछली बार नीद में वे कब चली थी ?

परिचारिका जब से महाराज मैदान में गए, मैने देखा है कि वे बिस्तर से उठती हैं, रतजामा पहनती हैं, सदूक खोलती हैं, कागज़ निकालती हैं, मोडती हैं, उसपर लिखती हैं, उसे पढती हैं, बाद को उसपर मुहर लगाती हैं और फिर बिस्तर पर जा लेटती हैं, और यह सब कुछ करती हैं गहरी नीद में।

डाक्टर . यह तो कुदरत की बडी भारी कुदूरत हुई कि इसान सोने का आराम और जागने के काम एक साथ करे। अच्छा, यह तो बताओ कि रात की इस बेचैनी मे चलने और दूसरे खास कामो

के अलावा वे कुछ कहती भी हैं ?

परिचारिका : श्रीमन्,वे जो कहती है, वह तो मैं नही वता सकती।

डाक्टर : मुझे तो बता ही सकती हो; और यह वहुत ज़रूरी है कि मुझे वताओ।

परिचारिका : न आपको, न किसीको; कहूँ तो उसे सावित करने को गवाह कहाँसे लाऊँ ?

(मोमवत्ती लिये लेडी मैकवेथ आती है।)

यह देखिए ! वे आ रही है। बिल्कुल ऐसा ही करती है, और, मैं मर जाऊँ जो झूठ कहूँ, एक-दम नींद में हैं। देखिए उनको : ज़रा आड़ में खड़े हो जाइए।

डाक्टर : वत्ती उन्हें कहाँ से मिल गई ?

परिचारिका : यह तो उनके पास ही थी : उनके सिरहाने वत्ती वरावर जलती रहती है, उनकी ऐसी आज्ञा है।

डाक्टर : लेकिन, देखो, उनकी आँखे तो खुली हैं।

परिचारिका : हाँ, पर वे देख कुछ भी नही रही हैं।

डाक्टर : अव ये कर क्या रही है ? देखो, ये अपना हाथ कैसे मल रही हैं।

परिचारिका : यह तो इनकी आदत हो गई है, वस इसी तरह हाथ धोते रहना। मैंने इन्हे १५-१५ मिनट ऐसे ही करते देखा है।

लेडी मैकबेथ : एक धव्वा फिर भी रह गया।

मैं लिख लूं। मेरी याद्दाश्त कही धोखा न खा जाय।

लेडी मैकबेथ . निकल भी, पापी धब्बे ! निकल, मैं कहती हूँ !—एक, दो : हैं, तब यही तो करने का वक्त है।—नरक मे अँधेरा है !—छि, मेरे स्वामी, छि ! सिपाही, और डरना ?—हम इससे क्यो डरें कि फलाँ जान गया, जब कोई हमारी ताक़त के सामने चूं नही कर सकता ?—तो भी किसने समझा था कि उस बूढे आदमी के अदर इतना लोहू है ?

डाक्टर ध्यान से सुनती हो ?

लेडी मैकबेथ फाइफ के थेन का बीबी से प्रेम था . अब वह कहाँ गई ?—क्या, ये हाथ कभी साफ ही न होगे ?—ऐसा नही करते, मेरे स्वामी, ऐसा नहीं करते आप इस तरह चौंककर सब चौपट कर रहे हैं।

डाक्टर . थू-थू : तूने वह सुना, जो तुझे नही सुनना था।

परिचारिका . मैं समझती हूँ, उन्होने वह कहा, जो उन्हे नही कहना था जो उन्होने स्वीकार किया, उसे भगवान ही जाने।

लेडी मैकबेथ लोहू की बदबू अब भी नहीं गई अरब का सारा इत्र इस छोटे-से हाथ मे खुशबू नही ला सकता। ओह ! ओह ! ओह !

. कैसी आहे हैं ! कलेजा मुँह को आ रहा है।

परिचारिका : मेरे सारे बदन को कोई सोने से मढ़ भी दे तो मैं ऐसे कलेजे से बाज़ आऊँ।

डाक्टर : भला हो, भला हो !

परिचारिका : श्रीमन्, भगवान से प्रार्थना करे कि ऐसा ही हो।

डाक्टर : यह बीमारी मेरे इलाज के बाहर है : फिर भी मैंने ऐसे लोग देखे है जो नीद मे चलते तो थे, पर जो भगवान का नाम लेते हुए अपने बिस्तरों पर मरे।

लेडी मैकबेथ : हाथ धो डालो, रतजामा पहन लो;—इतने डरे-डरे न दिखो।—मैं तुमसे एक बार फिर कहती हूँ, बैंको ज़मीन मे गड़ चुका : वह अपनी कब्र से नही निकल सकता।

डाक्टर : ऐसा भी ?

लेडी मैकबेथ : बिस्तर मे, बिस्तर मे : कोई फाटक पीट रहा है। भागो, भागो, भागो, भागो, मेरा हाथ पकड़ लो। किया अनकिया न हो सकेगा। बिस्तर मे, बिस्तर मे, बिस्तर मे।

डाक्टर : अब क्या वे बिस्तर मे जायँगी ?

परिचारिका : सीधे।

डाक्टर : बुरी तरह की कानाफूसी लोगो मे है
लावाजिव कामो से लावाजिब तकलीफ़ें
पैदा होती : जो पापी हैं अपने बहरे

मैं तो खाली तन का रोग मिटा सकता हूँ;
इन्हें चाहिए मन की मैल छुडानेवाला ।—
ईश्वर, हम सबकी रक्षा कर ! देखभाल में
इनको रखना, छुरी वगैरह इनके पास न
रहने पाए, इन्हें अकेला नही छोडना ।—
कानो ने जो सुना, उन्हें है उसपर गैरत,
आँखो ने जो देखा, उनको उसपर हैरत,
जो दिमाग मे, उसे नही कहने की जुरंत ।—
अच्छा, मेरा नमस्कार अब ।

परिचारिका : नमस्कार है ।

[दोनों जाते हैं

दूसरा दृश्य

डसीनेन के पास का इलाका

(मेनटेथ, कैटनेस, ऐंगस, लेनाक्स और सैनिक गण
ढोल और झडो के साथ आते हैं ।)

मेनटेथ : मैलकम औ' उसके काका सिवर्ड औ' मैकडफ
अंग्रेजी फौजें लेकरके पहुँच गए हैं ।
उनके अदर वदले के अंगार धधकते;
उनको न्याय दिलाने को मुर्दे भी उठकर
अपना खून वहाएँगे, औ' वहादुरी से
युद्ध करेगे ।

ऐंगस हम उनसे वरनम वन के नजदीक
मिलेंगे : इसी तरफ को आते हैं वे ।

कैटनेस : क्या मैलकम के दल में डोनलबेन नहीं है ?
लेनाक्स : नही. मुझे यह ठीक पता है । मुझको सूची
मिली कि जिसमे सरदारो के नाम दिए हैं :
उनमे है सिवर्ड का बेटा और बहुत से
युवक कि जिनकी मसे नही भीगी हैं अबतक ।
मेनटेथ : ज़ालिम क्या करता है ?
कैटनेस : उसने डंसीनेन
पहाड़ी पर मज़बूत किलेबंदी कर ली है ।
कुछ उसको पागल कहते हैं; कुछ, कम नफ़रत
रखनेवाले, उसको क्रोधानल कहते हैं :
पर निश्चय है, अपने बिखरे दल पर शासन
करना उसके वश के बाहर ।
ऐंगस : अब उसको अनुभव
होता है, जो हत्याएँ उसने छिपकर
की थी, वे सब, हथेलियों पर खून से लिखी ;
कदम-कदम पर खड़ी बगावत अब उसके
विश्वासघात की निंदा करती : उसकी आज्ञा
में जो चलते है, सो चलते है दबाव से,
नही प्रेम से : अब उसको अनुभव होता है,
हथियाया पद-वैभव उससे नही सँभलता,
जैसे किसी देव का जामा बौना चोर
पहनकर भागे ।
मेनटेथ : जब सब कुछ जो उसके अंदर, वहाँ पड़े रहने
के ऊपर अपनी स्वय भर्त्सना करता,

तब उसकी इंद्रियाँ अगर विचलित रहती हैं,
काम न देती, कौन उन्हे दोषी ठहराए ?

कैंटनेस अब प्रस्थान करें हम, औ' अपने को उसकी
आज्ञा मे रक्खे जो सच्चा अधिकारी है
उसे मिलें जो रुग्ण राज्य के लिए दवा है,
औ' फिर उसके साथ देश के कष्ट-निवारण
मे हम अपने लोहू की हर बूँद गिराएँ।

लेनाक्स . या जितने से रंजित राज कमल मुसकाए,
औ' कतवार-सेवार सभी नीचे दब जाए।
हम बरनम की ओर बढे अब।

तीसरा दृश्य

डसीनेन। किले का एक कमरा

(मैकवेथ, डाक्टर और सेवक आते हैं।)

मैकवेथ • बंद करो अब खबरें, सबको भग जाने दो :
जबतक बरनम का वन डसीनेन पहाडी
तक न पहुँचता मुझे किसीका डर क्योंकर हो।
पिद्दे मैलकम की क्या हस्ती ? आखिर वह भी
नारि-जना है। सारा भूत-भविष्यत् जिनका
छाना, ऐसी रूहों ने मुझसे कह रक्खा
"अभय रहो, मैकवेथ, कोई भी जिसे नारि ने
जन्म दिया है, तुमपर कभी न हावी होगा।"—
तो भागो, झूठे सरदारो, और विलासी
अंग्रेजों से जा मिल जाओ . मैकवेथ जिस

दिमाग से लेता काम और जो दिल रखता है,
कभी नही वह भय-सशय से हिल सकता है।

(सेवक आता है।)

तेरा मुंह शैतान करे काला, कोढी के—!
यह गीदड़ का चेहरा तुझको कहाँ मिल गया ?

सेवक : दस हज़ार है—

मैकबेथ : गीदड़, गंदे ?

सेवक : सैनिक, मालिक !

मैकबेथ : जा, अपना मुँह मार तमाचे लाल बना जो
भय से पीला।। घोघे, कैसे सैनिक, पोंगे ?
तुझे मौत ले जाय ! मुर्दनी जो तुझपर है,
दहशत फैलाती है। कैसे सैनिक, भुतने ?

सेवक : आप इसे माने तो अग्रेजों की सेना।

मैकबेथ : मत मुँह दिखला (सेवक जाता है)—सेटन !—
मेरा दिल घबराता,
जबकि देखता—सेटन, सुनता नही, कहाँ है !—
यह संकट या तो गद्दी पर मुझे सदा को
बिठला देगा या ढकेल देगा नीचे को।
बहुत जी लिया : मेरे जीवन का वसंत अब
पीले औ' सूखे पत्तों मे बदल चुका है ;
मान, प्रेम, आज्ञा का आदर, मित्र गोष्ठियाँ—
वृद्धावस्था की शोभाएँ—ये सब मेरे
लिए नही है, इनके बदले मुझे मिले हैं
शाप, होठ के नहीं, हृदय के, मुँहदेखा गुण-

गान, पीठ के पीछे जिनसे दिल इनकार
किया करता है, मुँह पर जुर्रत करता डरता ।—
सेटन !—

(सेटन आता है ।)

सेटन . महाराज की क्या आज्ञा है ?

मैकबेथ : और खबर क्या ?

सेटन . मालिक, जो सवाद मिला था, सही मिला था ।

मैकबेथ . युद्ध करूँगा जब तक मेरी बोटी-बोटी
तन से अलग नही हो जाती । लाओ, मेरा
कवच कहाँ है ?

सेटन अभी नही अवसर आया है ।

मैकबेथ : मैं तन पर कसना चाहूँगा ।
कहो, रिसाला और किले के बाहर भेजें ;
घोडे दौडाओ चौफेर इलाके भर मे ,
डर की बात करे जो उनको फाँसी दे दो ।
लाओ मेरा कवच कहाँ है ।—कहो डाक्टर,
कैसी हालत है मरीज़ की ?

डाक्टर : मालिक, इतनी
वे बीमार नही हैं जितनी परेशान हैं,
ऐसे ख्यालो से, जो फिर-फिर उठते रहते,
जो उनको आराम नही लेने देते हैं ।

मैकबेथ . क्या इसकी कुछ दवा नही है ? इस दिमाग की
बीमारी को क्या तुम दूर नही कर सकते ?
खीचो सदमो को जो सुधि में जडें जमाए,
मेटो चिता जो दिमाग पर लिखी गई है

और किसी मधुमयी, विसुधिकारी औषधि से
बुसी हुई गंदगी निकालो, सुनो, डाक्टर,
जो उनकी छाती के अंदर ठँसी-धँसी है,
और वज़न बन भारी उनके मन पर बैठी ।

डाक्टर : इसमे तो मरीज ही अपनी शफा करेगा ।

मैकवेथ : शफा तुम्हारी जाय भाड़ में, मुझको उसकी
नही ज़रूरत ।—चलो कवच पहनाओ मुझको;

(सेटन कवच पहनाने लगता है ।)

बल्लम लाओ ।—सेटन, बाहर करो[1]—डाक्टर,
सब सरदार भगे जाते हैं ।—(सेटन से) खत्म
भी करो ।—
अगर देश की रोग-परीक्षा करो, डाक्टर,
और मर्ज़ पहचानो और दवा-दारू से
उसे पूर्व-सा सुंदर-स्वस्थ बना दो तो मैं
बड़ा तुम्हारा जस गाऊँगा, जो फिर ध्वनित-
प्रतिध्वनित होगा दिशा-दिशा से ।—(सेटन से)
इसे खींच लो[2] ।—
कहीं जड़ी-बूटी, जुलाब कोई ऐसा है
जो कि यहाँ से अंग्रेज़ों को बाहर करदे ?
सुना कभी उनके बारे में ?

डाक्टर : मेरे मालिक,
रण की शाही तैयारी से इधर-उधर कुछ
सुन रक्खा है ।

१—२ कवच का कोई बंद ।

मैकवेथ . इसको[1] पीछे-पीछे लाओ ।—
नही मौत से, बरबादी से मैं भय खाता,
जबतक डसीनेन नही बरनम बन आता ।
[बाहर जाता है

डाक्टर : (अलग) डसीनेन किले से मैं बाहर तो जाऊँ,
धन-लालच से कभी यहाँ तशरीफ न लाऊँ ।
[बाहर जाता है

चौथा दृश्य

डसीनेन के निकट का प्रदेश । जगल सामने है ।

(मैलकम, पिता और पुत्र सिवर्ड, मैकडफ, मेनटेथ, कैटनेस,
ऐंगस, लेनाक्स और रास ढोल और झडों के साथ
मार्च करते हुए सैनिको के साथ आते हैं ।)

मैलकम आताओ, दिन दूर नहीं अब जबकि हमारे
घर खतरो से बाहर होंगे ।

मेनटेथ इसमें क्या शक ।

पिता सिवर्ड . यह जगल है कौन सामने ?

मेनटेथ बरनम का वन ।

मैलकम : तुममे से हर एक सिपाही एक पेड की
शाखा काटे और उसे अपने आगे ले ·
ऐसा करने से हम अपनी सेना-सख्या
छिपा सकेंगे, और हमारा दल-बल कोई
ठीक नही अनुमान सकेगा ।

---

१ टोप या भाला ।

सिपाही : जो आज्ञा है ।

पिता सिवर्ड : इतना ही मालूम हमे, मदमाता जालिम
जमकर डंसीनेन पहाड़ी पर बैठा है,
और वहीपर हम उसपर घेरा डालेगे ।

मैलकम : यह उसकी सारी आशा है; क्योंकि जहाँ भी
लोगो ने मौका पाया है—क्या छोटे, क्या
बडे—सभी ने खुली बग़ावत कर रक्खी है ।
औ' जो उसके निकट, निकट वे मजबूरी से,
पर उनका भी साथ नही देते उनके दिल ।

मैकडफ़ : हक है किसके साथ, युद्ध-फल बतलाएगा,
अभी हमारा काम, जवाँमर्दी से लडना ।

पिता सिवर्ड : समय आ रहा है जो समुचित निर्णय करके
हमे बताएगा क्या हमने पाया, खोया,
ख्याल कयासी आकाशी कंगूरे छूते,
असली मसले तै होते बाहो के बूते :
इसीलिए अब युद्ध शुरू हो ।

[मार्च करते हुए सब जाते हैं

पाँचवाँ दृश्य

डंसीनेन । किले के अंदर

(मैकवेथ, सेटन और सैनिक ढोल और झंडो के
साथ आते हैं ।)

मैकबेथ : झंडों को दो गाड़ किले की दीवारों पर :
शोर बराबर होता है, 'वे बढ़े आ रहे !'

किंतु हमारे गढ की ताकत उनके घेरे
का उपहास करेगी औ' वे पडे यहीपर
काल-महामारी के मुख के ग्रास बनेंगे ।
अगर हमारी सेना के कुछ भाग न उनसे
जा मिल जाते, तो बराबरी के मुकाबले
पर साहस कर हम उनसे भिडते औ' उनको
दूर यहा से मार भगाते ।

(नेपथ्य में स्त्रियो के रोने की आवाज)

यह गुल कैसा ?

सेटन नाथ, औरतो का यह रोना ।

[जाता है

मैकवेथ किसी बात से
डरना अब मैं भूल चुका हूँ । एक समय था
जबकि रात को अगर चीख सुन लूं तो मेरे
हाथ-पांव ठडे पड जाते थे, यदि मुझसे
कोई करुण कहानी कह दे, मेरे सिर के
बाल खडे हो जाते थे, इस तरह सिहरकर,
जैसे उनमे प्राण भरा हो । अब मैं इतनी
भीषणता से खेल चुका हूँ, मार-काट के
इतने ख्यालो को दिमाग मे बसा चुका हूँ,
मुझे भयकरता, कैसी भी, ज़रा नही विचलित
करती है ।

(सेटन लौटकर आता है ।)

वह रोना-धोना कैसा था ?

सेटन : नाथ, महारानी का जीवन-दीप बुझ गया।

मैकबेथ : उन्हे किसी दिन मरना ही था :
समय कभी आता ही ऐसी बात के लिए।—
आज, आज के बाद, आज फिर-फिर आ-आकर
चलता जाता है दिन-प्रतिदिन, अविचल क्रम से,
जीवन-पथ पर, जबतक छोर नही आ जाता;
और उजाले आज हमारे सारे काले
कल मे बदल अक्ल के अंधे इंसानों को
अंधकारमय काल-गर्त मे पहुँचा देते।
ठडी हो जा, ठडी हो जा, क्षणभंगुर लौ !
जीवन केवल एक स्वप्न है, चलता-फिरता,
एक दीन अभिनेता, जो दो दिन दुनिया के
रगमंच पर हँस-रोकर गायव हो जाता,
कोई पता नही फिर पाता : यह किस्सा है
किसी मूढ का गढ़ा कि जिसमें शब्दाडंबर
वड़ा, किंतु कुछ सार नही है।

(दूत आता है।)

वोल, तुझे क्या कहना है, जल्दी से कह, रे।

दूत : महाराज अपराध क्षमा हो,
मुझे उचित है सूचित करना, जो कुछ मैंने
अपनी आंखो से देखा है, किंतु उसे किस
भांति कहूँ मैं, नही जानता।

मैकबेथ : कहो निडर हो।

दूत : मैं पहाड़ पर पहरा देता खड़ा हुआ था,

अनायास बरनम पर मेरी आँख जा पड़ी,
और मुझे क्या लगा कि जैसे सारा जगल
चलने लगा, अचानक—

कवेथ : झूठे, धूर्त कही के !

न : चाहे जितना कोप करे, सच बात न हो तो ।
चलकर देखें, तीन मील के अंदर पेडो
का यह झुरमुट हिलता, बढता, चला आ रहा ।

कवेथ : अगर झूठ निकला तो इस दरख़्त की शाखा
से ज़िदा ही तुझे लटकना, मरना होगा,
सूख-सूख, बे-दाना-पानी । तेरा कहना
अगर सत्य है, तो मुझको परवाह नही जो
तू भी मुझको यही सज़ा दे—मेरी दृढता
डोल गई है , और पिशाचिनियो की झूठी-
सच्ची, दो-अर्थी बातो पर अब मेरे मन
में सदेह उठ रहा है, क्या कहा नही था ?—
'डसीनेन पहाडी तक वरनम वन जवतक
नही पहुँचता, अभय रहो,' लेकिन अब देखो,
जड जगल जगम-सा उठकर, बडा गज़ब है,
डसीनेन पहाडी तक वढता आता है ।—
निकल पडो अब हथियारो को बॉध-बाँधकर !—
इसका कहना अगर सत्य है, तो न यहाँ से
हटना सभव, औ' न यहाँ ठहरे रहना ही ।
मेरा मन अब इस दुनिया से ऊब गया है,
और चाहता हूँ मैं सारी विश्व व्यवस्था

नष्ट-भ्रष्ट हो जाय।—बजाओ रण का डंका!—
उठो, आँधियो! गिरो, बिजलियो, कड़क-
कड़ककर!
मरना है तो मरें कसे हम तन पर बख्तर।

[सब जाते हैं

छठा दृश्य

वही। क़िले के सामने का मैदान

(मैलकम, पिता सिवर्ड, मैकडफ़ आदि ढोल और झंडों के साथ, और उनके सिपाही पेड़ की शाखों के साथ आते हैं।)

मैलकम : अब काफ़ी नज़दीक आगए : अपने पत्ते
के पर्दों को गिरा सामने आ जाओ अब।—
वयोवृद्ध काका, अपने वरवीर पुत्र के
साथ, हमारे प्रथम युद्ध का आज तुम्हीं
नेतृत्व करोगे : हम, सुयोग्य मैकडफ अपने
ऊपर ले लेंगे, जो कुछ करने को बाकी है,
जैसी हमने अपने बीच व्यवस्था की है।

पिता सिवर्ड : जैसा भी आदेश आपका, विजय आपकी।—
आज शाम ज़ालिम की सेना मिल भर जाए,
हम न हराएँ उसको तो वह हमें हराए।

मैकडफ़ : साथ बजा दो सब नरसिंघे, सब नक़्क़ारे,
जिनसे आती मौत, रुधिर की बहती धारें।

[सब बाहर जाते हैं। नेपथ्य में लगातार रणभेरियों की आवाज़

सातवाँ दृश्य

वही। मैदान का दूसरा भाग

(मैकबेथ आता है।)

मैकबेथ : खूँटे से मुझको बाँधा है, कठिन भागना :
भालू-सा मैं युद्ध करूँगा इन कुत्तों से।—
ऐसा कौन कि जिसे नही नारी ने जन्मा ?
जो ऐसा हो, उसका मुझको डर है, यानी
नहीं किसीका।

(पुत्र सिवर्ड आता है।)

पुत्र सिवर्ड : क्या है तेरा नाम ?

मैकबेथ : डरेगा तू सुनकरके।

पुत्र सिवर्ड : कभी नही, चाहे सारे नारकी नरों में
तेरा नाम भयंकरतम हो।

मैकबेथ : मैं मैकबेथ हूँ।

पुत्र सिवर्ड : इससे ज़्यादा घृणित नाम अपनी जिह्वा पर
खुद शैतान नही ला सकता।

मैकबेथ : औं न भयानक।

पुत्र सिवर्ड : व्यर्थ न बोल, घिनौने ज़ालिम, अभी खड्ग से
सिद्ध करूँगा, तू झूठा है।

(वे लडते हैं और पुत्र सिवर्ड मारा जाता है।)

मैकबेथ : तू नारी से
जन्मा था —मैं नारी से जन्मे लोगो की
तलवारो पर मुसकाता हूँ और उपेक्षा

से उनके शस्त्रो पर अट्टहास करता हूँ।

[बाहर जाता है

(रणभेरी। मैकडफ आता है।)

मैकडफ़ : उधर शोर है।—जालिम, ज़रा सामने तो आ :
अगर मरा तू, और न मेरे आघातों से,
तो मेरी पत्नी, मेरे बच्चों की रूहें,
सदा सताती मुझे रहेगी। क्या मारूँ मैं
उन दरिद्र करनो[1] को जिनकी मुट्ठी गर्मा
तूने भाले पकड़ाए हैं : मैकबेथ, मेरी
खड्ग-धार ने जो तेरा शोणित न पिया तो
अच्छा है मै उसे तृपित ही बंद म्यान के
अदर कर दूँ।

(नेपथ्य में तलवारे चलने की आवाज़)

खाँड़े की इन खनकारो से
ऐसा लगता उसको कोई वीर बाँकुरा
चला रहा है; उसी जगह तू निश्चय होगा।
भाग्य, उसे तू एक बार मेरे आगे ला!
मुझे और कुछ नही चाहिए।

[बाहर जाता है। नेपथ्य मे रणभेरी बजती है।

(मैलकम और पिता सिवर्ड आते हैं।)

पिता सिवर्ड : महाराज, इस ओर;—किला अब हाथ आ गया:
ज़ालिम की सेनाओ मे तो फूट पड़ गई,
सब सरदार हमारे रण में डटे हुए हैं।

---

१. आयरलैंड के पैदल सैनिक।

दिवस आपका विजय-घोष करने ही को है,
थोडी-सी कोशिश करनी है।

मैलकम : हमको ऐसे
शत्रु मिले जो दिखलाने भर को लड़ते थे,
वार नही करते थे।

पिता सिवर्ड : श्रीमन्, चलें किले मे।

[दोनो जाते हैं।

(नेपथ्य में रणभेरी बजती है।)

(मैकवेथ फिर आता है।)

मैकवेथ : आत्मघात किसलिए करूँ मैं औ' अपने ही
खाँडे से किसलिए मरूँ, जब शत्रु सामने ?
इसके घाव उन्ही के अगो पर फवते हैं।

(मैकडफ फिर आता है।)

मैकडफ : पलट, नरक के कुत्ते, पलट।

मैकवेथ : सवो में केवल
तुझे वचा जाना मैं चाह रहा था, लेकिन
हट जा, तेरे कुल का खून वहुत-सा पहले
से ही मुझपर चढा हुआ है।

मैकडफ : शब्द नही हैं
मेरे मुख मे, सुन मेरी आवाज़ खड्ग में.
शब्द वना ही नही कि तुझ-से दुर्दानव का
नामकरण हो।

मैकवेथ : क्यो तू अपनी वाँह थकाता.
जाकर पहले तू अपनी तलवार-धार से

काट हवा को, तब मेरे तन को घायल कर :
जा, उनपर कर वार कि जो मूली-गाजर है—
मेरा जीवन अभिमंत्रित है, उसे नही छू
सकता जो नारी से जन्मा।

मैकडफ़ : भूल मंत्र-बल
जाकर अपने इष्ट देव से पूछ, तुझे वह
बतलाएगा, मैकडफ अपने मातृ गर्भ के
समय पूर्व ही कट जाने से निकल पड़ा था।

मैकबेथ : जल जाए वह जीभ कहे जो मुझसे ऐसा,
क्योकि उसीने मेरी इंसानियत मिटा दी :
इन छलनामय पिशाचियो का कभी न कोई
करे भरोसा, जो अपनी दो-अर्थी बातो
से हमको धोखा देती है, जो कि हमारे
कानों से जो वादे करती उन्हे हमारी
आँखों से तोड़ा करती हैं।—अब मैं तुझसे
नहीं लड़ूँगा।

मैकडफ़ . तो, कायर, हथियार डाल दे,
और वक्त का एक तमाशा बनकर तू जी :
अजब जानवर जैसा तुझको हम रक्खेगे,
खंभे से बाँधेगे, ऊपर लिखा रहेगा,
'यह जालिम है।'

मैकबेथ मैं हथियार नही डालूँगा,
कि छोकरे मैलकम के पैरों के आगे की
धरती पर मैं माथा टेकूँ, कि मैं भीड़ की

छेद सहूँ औ' गाली खाऊँ। भले बढे बर-
नम का जगल डसीनेन पहाडी तक औ'
भले न तू, मेरा प्रतिद्व दी, नारि-जना हो,
फिर भी मैं अपने अतिम बल को परखूँगा·
मैं अपने तन के आगे अब युद्ध-परीक्षित
ढाल डालता हूँ मैकडफ, कर वार, और जो
पहले बोले, 'बस, ठहरो !' धिक्कार उसे है।

[लडते हुए दोनो बाहर जाते हैं

(विराम वाद्य। बाजे-गाजे की ध्वनि। मैलकम, पिता सिवर्ड, रास, सरदार लोग और सैनिक ढोल और झडो के साथ फिर आते हैं।)

मैलकम
मैं प्रसन्न होता यदि वे सब मित्र हमारे,
जिन्हे यहाँ हम नही देखते, सकुशल आते।

पिता सिवर्ड
कुछ को तो जाना ही होगा, फिर भी जो
मौजूद यहाँ हैं, उन्हे देखते यह महान दिन
हमको महँगा नही पडा है।

मैलकम :
मैकडफ नही
दिखाई देता, औ' न तुम्हारा वीर पुत्र ही।

रास
पुत्र तुम्हारा सैनिक ऋण से उऋण हो गया
अतिम साँसों तक उसने पौरुप दिखलाया,
युद्धस्थल मे उसने अपना भुज-बल-विक्रम
जहाँ अडिग रह सिद्ध किया था, वही वीरगति
पाई उसने।

पिता सिवर्ड
तो क्या उसकी मृत्यु हो गई ?

रास : हाँ, उसका शव समर-भूमि से हम ले आए।
वह था इतना योग्य कि उसपर कितना ही हम
शोक मनाएँ कम है।

पिता सिवर्ड : उसके घाव कहाँ थे ?

रास : सब सीने पर।

पिता सिवर्ड : तब तो वह सच्चा सैनिक था !
मेरे इतने बेटे होते जितने मेरे
तन पर रोएँ, तो भी उनके लिए वीरगति
वही चाहता, इसे मिली जो। और शोक अब
उसपर करना उचित नही है।

मैलकम : उचित नही क्यो ?
और शोक उसपर होगा ही।

पिता सिवर्ड : शोचनीय वह
और नही है, सब कहते है, उसने अपना
फर्ज़ बजाकर, कर्ज़ अदाकर, त्याग दिया तन
उसकी आत्मा को प्रभु अपनी अभय शरण दें !—
और नए सुख का सामान इधर से आता।

(मैकवेथ के सिर के साथ मैकडफ आता है।)

मैकडफ़ : महाराज की जय, कि आज तू महाराज है।
सब देखें किस जगह टिका है निंदित मुड
अनधिकारी का. समय आज स्वाधीन हो गया।
देख रहा हूँ तुझको शोभित अपने नरवर
सरदारो मे, जो मेरी ही भाँति हृदय से
तेरा अभिनंदन करते है। मेरी इच्छा

	है सब मेरे साथ जोर से मिलकर बोलें,—
	स्काटलैंड के महाराज की जय !
सब	स्काटलैंड के महाराज की जय !
मैलकम	मेरे सब सरदारो, सारे नातेदारो,
	तुमने मेरे प्रति जो अपना प्रेम दिखाया,
	उसका अति आभार मानकर निर्विलंब मैं
	तुमसे उऋण हुआ चाहूँगा। तुम सब अब से
	अर्ल कहाओ, स्काटलैंड में यह गौरव-पद
	पानेवाले सर्व प्रथम हो। काम बहुत से
	जो बाकी हैं, यथासमय वे किए जायँगे,—
	हमें बुलाना है अपने मित्रो को वापस
	जो कि जुल्म की आँखो के फदे से अपनी
	जान बचाकर परदेशो को भाग गए थे,
	हमें न्याय के सम्मुख लाना है उन सबको
	जो कि मत्रदाता थे इस मृत हत्यारे औ'
	उसकी पिशाचिनी रानी के, जिसने ऐसा
	सुना गया है, अपने ही घातक हाथो से
	अपना जीवनात कर डाला, ये, आवश्यक
	और काम भी, जिस प्रकार से, जहाँ, जिस समय,
	करने को है, प्रभु प्रसाद से किए जायँगे।
	धन्यवाद फिर सबको मेरा, और निमत्रण,
	चल स्कोन मनाओ मेरा राज्यारोहण।
	[बाजे-गाजे की ध्वनि के साथ सब बाहर जाते हैं